Year 12, Issue 48
Oct.-Dec., 2015

VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

EDITOR - PUBLISHER : SNEH THAKORE (LIMKA BOOK RECORD HOLDER)

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

वसुधा

संपादन व प्रकाशन
स्नेह ठाकुर
लिम्का बुक रिकॉर्ड होल्डर

वर्ष १२ - अंक ४८, अक्टूबर-दिसम्बर २०१५

शरदानुभव

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

शरद जकड़ता है मुट्ठियों में
स्वयं को

आ जाता है अधरों तक
ठिठुरन का नाच
पैरों से उठ
दाँत ओष्ठ-मृदंग पर
थाप
देने लगते हैं

हाथ
किसी रात के
हाथों में हाथ डाल
रुई के खेत में पसर जाते हैं

और एक कम्बल
रात से
लिपट कर
सो जाता है.

वसुधा

संपादन व प्रकाशन : स्नेह ठाकुर

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
संपादकीय		२
आलोक-पर्व की ज्योतिर्मय देवी	हजारी प्रसाद द्विवेदी	५
आत्मदीप	डॉ. हरिवंश राय बच्चन	८
गुलाब सिंह	डॉ. दीप्ति गुप्ता	९
कोई लौटा दे मेरे बचपन को....	डॉ. बासुदेव प्रसाद	१४
जेहिं गिरि चरण देइ हनुमंता	मनोज कुमार श्रीवास्तव	१६
क्यों और कैसे करें आरती	मीता जिंदल	२५
कर मेरा श्रृँगार तू	पुष्पा जोशी	२६
हिन्दी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में हिन्दी सिनेमा की भूमिका	डॉ. विनय कुमार शर्मा	२७
जिसे हम गीत कहते हैं	विनीता शर्मा	३१
और सतसंग चलता रहा	डॉ. नरेंद्र शुक्ल	३३
आइये, संजो लें विरासत के ये निशां	अरुण तिवारी	४१
ग़ज़ल	रूप सागर	४३
पयाम	डॉ. बी.एल. गौड़	४४
शरदानुभव	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि	१अ
स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :
16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534
वार्षिक शुल्क Annual subscription.....$25.00
डाक द्वारा By Mail, Canada & USA.....$35.00, Other Countries.....$40.00
Website: http://www.Vasudha1.webs.com
e-mail: sneh.thakore@rogers.com

संपादकीय

इस अंक का संपादकीय विनम्रतापूर्वक श्रीराम के चरण-कमलों में नतमस्तक, सभी शुभाकांक्षियों के प्रति आदर एवं स्नेह से प्लावित, उन्हें धन्यवाद देती हुई, स्वयं से शुरू कर रही हूँ. यह सभी की मंगलकामनाओं का प्रतिफलन और मेरा सौभाग्य है कि भारत के राष्ट्रपति के कर-कमलों द्वारा मुझे राष्ट्रपति भवन में "पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण सम्मान २०१३ - हिन्दी सेवी सम्मान" २४ सितम्बर को प्रदान किया जाएगा. वसुधा का यह अक्टूबर-दिसम्बर अंक उससे पहले ही प्रकाशन के लिए जा चुका होगा और जब अक्टूबर में यह अपने सुधी पाठकों के हाथ में आयेगा, तब तक समारोह सम्पन्न हो चुका होगा. समय के अंतराल की इस अपाधापी की विवशता में सभी के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन अगले वर्ष की जनवरी तक रोके रखना उचित न लगा. अपने सभी हितैषियों के प्रति हृदय से आभारी हूँ.

अपनी जन्मभूमि की पावन-पुनीत माटी की सुगंध को स्वयं में बसा, उसके आशीषों से पल्लवित-पोषित इस शरीर व आत्मा द्वारा, दूर बैठे स्वदेश बने इस विदेश में भी अपनी भारत माँ के गौरव का झंडा गर्व से उठाये रखने के प्रशिक्षण के प्रति आभार प्रगट करने का जो सौभाग्य मुझे अपने साहित्य की भावाव्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त करने का गौरव मातृ भाषा हिन्दी ने प्रदान किया, उस माँ को नमन करते हुए केंद्रीय हिन्दी संस्थान व राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी जी की तहेदिल से आभारी हूँ कि उन्होंने इसे सराहा. जहाँ यह सम्मान व्यक्तिगत सम्मान है वहीं यह प्रवासी भारतीयों का भी सम्मान है, कैनेडा का सम्मान है. क्योंकि सच पूछा जाए तो देश ने राष्ट्र के सर्वोच्च पद से यह सम्मान दिला अपने एक प्रवासी भारतीय को सम्मानित किया है. देश ने हम प्रवासियों को भुलाया नहीं है, यह अनुभूति सचमुच अद्‌भुत है. अपने प्यारे भारत से, जिसने पाल-पोस कर इस लायक बनाया कि विदेश में भी गर्व से सिर उठा भारतीय होने का एहसास हो सके, साथ ही इस देश बने विदेश ने मेरी हिन्दी के प्रति भावनाओं का आदर कर मुझे इस काबिल बनाया कि मैं अपने देश का यह सम्मान प्राप्त कर सकूँ, इस हेतु भारत और कैनेडा दोनों के प्रति आभारी हूँ.

मेरे लिए यह व्यक्तिगत रूप से और वसुधा के संपादक/प्रकाशक के रूप में भी यह बहुत ही प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि हमारे परम मित्र व वसुधा के गणमान्य साहित्यकार आदरणीय एवं प्रिय डॉ. नरेंद्र कोहली, डॉ. सुषम बेदी तथा डॉ. अलका धनपत केंद्रीय हिन्दी संस्थान के सम्मान से विभूषित होंगे. ठाकुर साहब व अपनी ओर से एवं वसुधा की ओर से बधाई एवं अनेकानेक शुभकामनाएँ.

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री राम नाईक जी ने 'वसुधा' एवं मेरी पुस्तकों के बारे में जो प्रेरणादायक पत्र भेजा है, हार्दिक धन्यवाद व आभार-स्वरूप उसे प्रकाशित कर रही हूँ. माननीय राज्यपाल आदरणीय श्री राम नाईक जी की "कैकेयी चेतना-शिखा", "लोक-नायक राम" एवं "वसुधा" के प्रति व्यक्त भाव-प्रवण भावाव्यक्ति हेतु आभार के शब्द कम पड़ रहे हैं. ऐसा प्रतीत हुआ मानो अपने नाम-स्वरूप श्रीराम ने स्वयं ही मेरी राम-कथा के प्रति अपने मुखारबिन्दु से यह कह दिया कि "उपन्यास को पूरा पढ़े बिना छोड़ने की इच्छा नहीं होती". ईश्वर से प्रार्थना है कि मेरे आने वाले उपन्यास "जनकनंदिनी सीता" को भी उनका और आप सबका आशीर्वाद प्राप्त हो. "कैकेयी : चिंतन के नव परिदृश्य, संदर्भ : अध्यात्म रामायण" भी जब तक वसुधा आपके हाथों में पहुँचेगी, प्रकाशित हो चुका होगा. "चिंतन के धागों में कैकेयी, संदर्भ : श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण" तथा "चिंतन के नव आयाम, संदर्भ : तुलसीकृत श्री रामचरितमानस" पहले प्रकाशित हो चुके हैं. 'वसुधा' की प्रशंसा का श्रेय वसुधा के लेखकों और पाठकों की थाती है, उनका मिला-जुला सहयोग ही वसुधा की सफलता का आधार-स्तंभ है.

"Dreams - is not what you see in sleep, is the thing which doesn't let you sleep." खुली आँखों सपने देखने वाला "भारत रत्न" इस नश्वर शरीर को त्याग चिर-निद्रा के आगोश में समा

गया है. जहाँ एक ओर भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति आदरणीय अब्दुल कलाम जी यद्यपि कि स्वयं इस जहान को छोड़, हम सबको अलविदा कह हमसे शारीरिक रूप में दूर जा चुके हैं, तथापि दूसरी ओर अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से उनकी उपस्थिति हमारे हृदय को आलोड़ित करती रहेगी, उनके होने का आभास दिलाती रहेगी, वे सदैव हम सबके मन-मस्तिष्क में बने रहेंगे. उनकी कलम का प्रभाव उन्हें हमसे कभी दूर नहीं होने देगा, उनकी शिक्षा हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी.

युवा पीढ़ी किसी भी देश का आधार-स्तंभ है. माननीय अब्दुल कलाम जी ने अपने वक्तव्यों में हरदम युवा-पीढ़ी का आह्वान किया है, उन्हें प्रोत्साहित किया है, जागते हुए पूरे होशोहवास में स्वप्न देखने की चुनौती दी है, ललकारा है. कोई भी व्यक्ति रात्रि-निद्रा में देखे गए मधुर स्वप्न को सुबह जागते ही झाड़-पोंछ उठ खड़ा होता है, उन पर अम्ल नहीं करता. उनकी शिक्षानुसार स्वप्न तो वह होना चाहिए जो तुम्हें सोने ही न दे, जो तुम्हें सुप्तावस्था की जगह जाग्रतावस्था में ला कर्मठ कर्मशील बनाए और तुम उस स्वप्न-शिखर पर पहुँचने के लिए आगे-से आगे बढ़ते ही चले जाओ. उनका स्वयं का जीवन कर्मप्रधान रहा. अंतिम साँस तक वे अपना कर्म-धर्म निभाते रहे.

अनुकरणीय कलाम जी के आदर्शों पर चलने के प्रयास में हम सफल हों, इसी शुभाकांक्षा के साथ सहजता, सरलता, सादगी सम्पन्न मिसाइलमैन, विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति, श्री अब्दुल कलाम जी की दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि.

डॉ. तकी जी ने "गालिब से इकबाल तक" एक संगोष्ठी का सफल आयोजन किया. भारत के कोंसुल जनरल माननीय श्री अखिलेश मिश्रा व पाकिस्तान के कोंसुल जनरल माननीय श्री असग़र अली गोलो के साथ मुझे भी मंच पर सहभागिता प्रदान करने हेतु धन्यवाद.

हैदराबाद से आईं कवि, गीतकार श्रीमती विनीता शर्मा, श्रीमती सुमति शर्मा के साथ घर पर मिलने आईं और अपने गीतों से मेरा निवास स्थान गुंजित कर आनंदित किया. वसुधा में प्रकाशित उनकी कविता से आशा है कि पाठक भी आनंदित होंगे.

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में "वी कनेक्ट कम्युनिटी सर्विसेज़" के तत्वावधान में उसकी सर्वेसर्वा श्रीमती जयश्री पाण्डे द्वारा संचालित, १५ अगस्त की सुबह वॉन सिटी हॉल के परिसर में एक सफल समारोह हुआ, जहाँ गणमान्य भारतीयों के साथ-साथ, एम.पी. व सिटी हॉल के कौंसलर व मेयर माननीय श्री मौरिज़ियो बेविलाकुआ भी उपस्थित थे. "वी कनेक्ट" की डायरेक्टर होने के नाते इस गौरवपूर्ण भव्य आयोजन के संयोजन में सम्मिलित सभी सहयोगियों को मेरा साधुवाद, नमन.

भारतीय कोंसुलावास टोराण्टो के कोंसुल जनरल श्री अखिलेश मिश्रा जी के कुशल निर्देशन में १५ अगस्त की सांध्य स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ. इस समारोह हेतु ठाकुर साहब व मुझे निमंत्रित करने के लिए माननीय अखिलेश मिश्रा जी व श्रीमती रीति मिश्रा जी का हार्दिक धन्यवाद, आभार.

अभी हाल ही में सूचना मिली है कि भोपाल, भारत में १०-१२ सितंबर को सम्पन्न होने वाले १०वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में मुझे "विश्व हिन्दी सेवी" सम्मान से सम्मानित किया जाएगा. विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज जी, विदेश मंत्रालय, चयन समिति, इस प्रकरण से संबंधित सभी की आभारी हूँ. हिन्दी के संरक्षकों से ऐसा प्रोत्साहन विदेश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु आगे बढ़ने के लिए नई ऊर्जा प्रदान करता है, कठिनाइयों से पार पाने के लिए उत्साहित करता है.

दीपावली पर्व और नव-वर्ष आ रहा है. 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की कामना है. सबमें आत्म-प्रकाश का उदय हो. घृणा, हिंसा का तिमिर तिरोहित हो. सर्वत्र भाईचारे की मंगलमय सद्भावना से ओत-प्रोत विश्व कल्याण की भावना हो, इसी शुभाकांक्षा सहित, सस्नेह 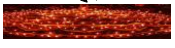 स्नेह ठाकुर

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

21 जुलै, 2015

प्रिय सुश्री स्नेह ठाकुर जी,

अधिवक्ता श्री एन.एस. चौरसिया, सदस्य, अवध बार एसोसिएशन के माध्यम से भेजा गया आपका दिनांक मार्च 18, 2015/20 जुलाई, 2015 का पत्र एवं उसके साथ आपके दो ग्रंथ लोक-नायक राम और चिन्तन के धागों में कैकेयी प्राप्त हुई। धन्यवाद।

जिस मनोयोग से आप विगत 11 वर्षों से हिन्दी पत्रिका 'वसुधा' के माध्यम से साहित्य सेवा कर रहीं हैं, वह अभिनंदनीय है। कैकेयी के चरित्रिक गुणों, मानसिकता, अर्न्तद्वन्द को अन्तर्भूत करते हुए उसके सकारात्मक पहलू की मिमांसा आपने जिस निरपेक्षता से की है, वह मन को छू जाता है। वाल्मिकी रामायण, रामचरितमानस के अलावा भी श्री राम के लोकमंगलकारी चरित्र का वर्णन अनेकों प्रबुद्ध जानकारों द्वारा किया गया है। फिर भी उपन्यास के रुप में आपकी इस प्रस्तुति को पूरा पढे बिना छोडने की इच्छा नहीं होती। उपन्यास का शब्द संयोजन और भाव आल्हादित करते हैं।

विदेश में रहकर भी जिस मनोयोग से आप हिन्दी साहित्य की साधना कर रहीं हैं, वह अभिनंदनीय है।

धन्यवाद.

आपका,

(राम नाईक)

सुश्री स्नेह ठाकुर,
द्वारा - श्री वरुण ठाकुर,
ए 252, न्यू फ्रेंडस कॉलनी, दूसरी मंजिल
नई दिल्ली 110065.
Email : sneh.thakore@rogers.com

दूरभाष : 0522-2620494-95, 2236497-98, 2236992, 2620331, 2620316, 2236093, फैक्स : 0522-2239488
ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

आलोक-पर्व की ज्योतिर्मय देवी

हजारी प्रसाद द्विवेदी

'मारकंडेय पुराण' के अनुसार समस्त सृष्टि की मूलभूत आद्याशक्ति महालक्ष्मी है। वह सत्व, रज और तम तीनों गुणों का मूल समन्वय है। वही आद्याशक्ति है। वह समस्त विश्व में व्याप्त होकर विराजमान है। वह लक्ष्य और अलक्ष्य, इन दो रूपों में रहती है। लक्ष्यरूप में यह चराचर जगत ही उसका स्वरूप है और अलक्ष्य रूप में यह समस्त सृष्टि का मूल कारण है। उसी से विभिन्न शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। दीपावली को इसी महालक्ष्मी का पूजन होता है। तामसिक रूप में वह क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, कालरात्रि, महामारी के रूप में अभिव्यक्त होती है; राजसिक रूप में वह जगत का भरण-पोषण करने वाली 'श्री' के रूप में उन लोगों के घर में आती है, जिन्होंने पूर्व-जन्म में शुभ कर्म किये होते हैं; परन्तु यदि इस जन्म में उनकी वृत्ति पाप की ओर जाती है तो वह भयंकर अलक्ष्मी बन जाती है। सात्विक रूप में वह महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती के रूप में अभिव्यक्त होती है। मूल आद्याशक्ति ही महालक्ष्मी है।

शास्त्रों में ऐसे वचन भी मिल जाते हैं , जिनमें महालक्ष्मी या महासरस्वती को ही आद्याशक्ति कहा गया है। जो लोग हिन्दू शास्त्रों की पद्धति से परिचित नहीं होते हैं, वे साधारणतः इस प्रकार की बातों को देखकर कह उठते हैं कि यह बहुदेववाद है। यूरोपिय पण्डितों ने इसके लिये ' पालिथीज्म ' शब्द का प्रयोग किया है। पालिथीज्म या बहुदेववाद से एक ऐसे धर्म का बोध होता है, जिसमें अनेक छोटे-बड़े देवताओं की मण्डली में विश्वास किया जाता है। इन देवताओं की मर्यादा और अधिकार निश्चित होते हैं। जो लोग हिन्दू शब्दों की थोड़ी भी गहराई में जाना आवश्यक समझते हैं, वे इस बात को कभी नहीं स्वीकार कर सकते। मैक्समूलर ने बहुत पहले बताया था कि वेदों में पाया जाने वाला 'बहुदेववाद' वस्तुतः बहुदेववाद है ही नहीं, क्योंकि न तो वह ग्रीक-रोमन बहुदेववाद के समान है, जिसमें बहुत-से देव-देवी एक महादेवता के अधीन होते हैं और न अफ्रीका आदि देशों की आदिम जातियों में पाये जाने वाले बहुदेववाद के समान है, जिसमें छोटे-मोटे अनेक देवता स्वतंत्र होते हैं। मैक्समूलर ने इस विश्वास के लिये एक शब्द सुझाया था-हेनोथीज्म, जिसे हिन्दी में ' एकैकदेववाद ' शब्द से कुछ-कुछ स्पष्ट किया जा सकता है। इस प्रकार के धार्मिक विश्वास में अनेक देवताओं की उपासना होती अवश्य है, पर जिस देवता की उपासना चलती रहती है, उसे ही सारे देवताओं से श्रेष्ठ और सबका हेतुभूत माना जाता है। जैसे, जब इन्द्र की प्रार्थना का प्रसंग होगा, तो कहा जाएगा कि इन्द्र ही आदिदेव है; वरुण, यम, सूर्य, चन्द्र, अग्नि सबका वह स्वामी है और सबका मूलभूत है। पर जब अग्नि

की उपासना का प्रसंग होगा, तो कहा जायेगा कि अग्नि ही मुख्य देवता है और इन्द्र, वरुण आदि का स्वामी है और सबका मूलभूत देवता है, इत्यादि।

परन्तु थोड़ी और गहराई में जाकर देखा जाये तो इसका स्पष्ट रूप अद्वैतवाद है। एक ही देवता है, जो विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हो रहा है। उपासना के समय उसके जिस विशिष्ट रूप का ध्यान किया जाता है, वही समस्त अन्य रूपों में मुख्य और आदिभूत माना जाता है। इसका रहस्य यह है कि साधक सदा मूल अद्वैत सत्ता के प्रति सजग रहता है। अपनी रुचि और संस्कारों और कभी-कभी प्रयोजन के अनुसार वह उपास्य के विशिष्ट रूप की उपासना अवश्य करता है, परन्तु शास्त्र उसे कभी भूलने नहीं देना चाहता कि रूप कोई हो, है वह मूल अद्वैत सत्ता की ही अभिव्यक्ति। इस प्रकार हिन्दू शास्त्रों की इस पद्धति का रहस्य यही है कि उपास्य वस्तुतः मूल अद्वैत सत्ता का ही रूप है। इसी बात को और भी स्पष्ट करके वैदिक ऋषि ने कहा था कि 'जो देवता अग्नि में है, जल में है, वायु में है, औषधियों में है, वनस्पतियों में है, उसी महादेव को मैं प्रणाम करता हूँ।'

आज से कोई दो हजार वर्ष पहले से इस देश के धार्मिक साहित्य में और शिल्प और कला में यह विश्वास मुखर हो उठा है कि उपास्य वस्तुतः देवता की शक्ति होती है। यह नहीं है कि यह विचार नया है, पहले था ही नहीं, पर उपलब्ध धार्मिक साहित्य और शिल्प और कला सामग्री में यह बात इस समय से अधिक व्यापक रूप में और अत्याधिक मुखर भाव से प्रकट हुई दिखती है। इस विश्वास का सबसे बड़ा आवश्यक अँग यह है कि शक्ति और शक्तिमान् में कोई तात्विक भेद नहीं है, दोनों एक हैं। चन्द्रमा और चन्द्रिका की भाँति वे अलग अलग प्रतीत होकर भी एक हैं -'अन्तरं नैव जानीमश्चन्द्र-चन्द्रिकयोरिव।' परन्तु उपास्य शक्ति ही है। जो लोग इस विश्वास को अपनी तर्कसम्मत सीमा तक खींचकर ले जाते हैं, वे शाक्त कहलाते हैं। जो शक्ति और शक्तिमान् के एकत्व पर अधिक जोर देते हैं, वे शाक्त नहीं कहलाते। मगर कहलाते हों या न कहलाते हों, शक्ति की उपासना पर विश्वास दोनों का है। जिन लोगों ने संसार की भरण-पोषण करने वाली वैष्णवी शक्ति को मुख्य रूप से उपास्य माना है, उन्होंने उस आदिभूता शक्ति का नाम 'महालक्ष्मी' स्वीकार किया है। दीपावली के पुण्य-पर्व पर इसी आद्याशक्ति की पूजा होती है। देश के पूर्वी हिस्सों में इस दिन महाकाली की पूजा होती है। दोनों बातों में कोई विरोध नहीं है। केवल रुचि और संस्कार के अनुसार आद्याशक्ति के विशिष्ट रूपों पर बल दिया जाता है। पूजा आद्याशक्ति की ही होती है। मुझे यह ठीक-ठीक नहीं मालूम कि देश के किसी कोने में इस दिन महासरस्वती की पूजा होती है या नहीं। होती हो तो कुछ अचरज की बात नहीं होगी। दीपावली का पर्व आद्याशक्ति के विभिन्न रूपों के स्मरण का दिन है। यह सारा दृश्यमान जगत-ज्ञान, इच्छा और क्रिया के रूप में त्रिपुटीकृत है। ब्रह्म की मूल शक्ति में इन तीनों का सूक्ष्म रूप में अवस्थान होगा। त्रिपुटीकृत जगत की मूल कारणभूता इस शक्ति को ' त्रिपुरा' भी कहा जाता है। आरम्भ में जिसे महालक्ष्मी कहा गया है उससे यह अभिन्न है। ज्ञान रूप में अभिव्यक्त होने पर यह सत्वगुणप्रधान

सरस्वती के रूप में, इच्छा-रूप में रजोगुण-प्रधान लक्ष्मी के रूप में और क्रियारूप में तमोगुण-प्रधान काली के रूप में उपास्य होती है। लक्ष्मी इच्छा रूप में अभिव्यक्त होती है। जो साधक लक्ष्मी-रूप में आद्याशक्ति की उपासना करते हैं, उनके चित्त में इच्छाशक्ति की प्रधानता होती है, पर बाकी दो तत्व ज्ञान और क्रिया भी उसमें सहायक होते हैं। इसीलिए लक्ष्मी की उपासना 'ज्ञानपूर्वा क्रियापरा' होती है, अर्थात वह ज्ञान द्वारा चलित और क्रिया द्वारा अनुगमित इच्छा-शक्ति की उपासना होती है। 'ज्ञानपूर्वा क्रियापरा' का मतलब है कि यद्यपि इच्छाशक्ति ही मुख्यतः उपास्य है, पर पहले ज्ञान की सहयता और बाद में क्रिया का समर्थन इसमें आवश्यक है। यदि उलटा हो जाये, अर्थात इच्छा-शक्ति की उपासना क्रियापूर्वा और ज्ञानपरा हो जाए, तो उपासना का रूप बदल जाता है। पहली अवस्था में उपास्या लक्ष्मी समस्त जगत् के उपकार के लिये होती है। उस लक्ष्मी का वाहन गरुण होता है। गरुण शक्ति, वेग और सेवावृत्ति का प्रतीक है। दूसरी अवस्था में उसका वाहन उल्लू होता है। उल्लू स्वार्थ, अन्धकारप्रियता और विच्छिन्नता का प्रतीक है। लक्ष्मी तभी उपास्य होकर भक्त को ठीक-ठीक कृतकृत्य करती है जब उसके चित्त में सबके कल्याण की कामना रहती है। यदि केवल अपना स्वार्थ ही साधक के चित्त में प्रधान हो, तो वह उलूक-वाहिनी शक्ति की ही कृपा पा सकता है। फिर तो वह तमोगुण का शिकार हो जाता है। उसकी उपासना लोककल्याण मार्ग से विच्छिन्न होकर बन्ध्या हो जाती है। दीपावली प्रकाश का पर्व है। इस दिन जिस लक्ष्मी की पूजा होती है, वह गरुण-वाहिनी है - शक्ति, सेवा और गतिशीलता उसके प्रमुख गुण हैं। प्रकाश और अन्धकार का नियत विरोध है। अमावस्या की रात को प्रयत्नपूर्वक लाख-लाख प्रदीपों को जलाकर हम लख्मी के उलूकवाहिनी रूप की नहीं, गरुणवाहिनी रूप की उपासना करते हैं। हम अन्धकार का, समाज में कटकर रहने का, स्वार्थपरता का प्रयत्नपूर्वक प्रात्याख्यान करते हैं और प्रकाश का, सामाजिकता का और सेवावृत्ति का आव्हान करते हैं। हमें भूलना न चाहिए कि यह उपासना ज्ञान द्वारा चलित और क्रिया द्वारा अनुगमित होकर ही सार्थक होती है।
सर्वहया दया महालक्ष्मीस्त्रीगुणा परमेश्वरी। लक्ष्यालक्षस्वरूपा या व्याप्त कुत्सनं व्यवस्थिता।।

आत्मदीप

डॉ. हरिवंश राय बच्चन

मुझे न अपने से कुछ प्यार,
मिट्टी का हूँ, छोटा दीपक,
ज्योति चाहती, दुनिया जब तक मेरी,
जल-जल कर मैं उसको देने को तैयार.

पर यदि मेरी लौ के द्वार,
दुनिया की आँखों को निद्रित,
चकाचौध करते हों छिद्रित
मुझे बुझा दे बुझ जाने से मुझे नहीं इंकार.

केवल इतना ले वह जान
मिट्टी के दीपों के अंतर
मुझमें दिया प्रकृति ने है कर
मैं सजीव दीपक हूँ मुझ में भरा हुआ है मान.

पहले कर ले खूब विचार
तब वह मुझ पर हाथ बढ़ाए
कहीं न पीछे से पछताए
बुझा मुझे फिर जला सकेगी नहीं दूसरी बार.

गुलाब सिंह

डॉ. दीप्ति गुप्ता

आम के पेड़ का थाँवला बनाता 'गुलाब सिंह, बड़ा मगन हुआ, कुछ गुनगुनाता सा, अपने काम में लगा हुआ था। कल से उसने लगभग सभी पेड़ों के थाँवले बनाकर, फूलों की क्यारियों की सफाई कर उनकी डौलें भी विशेष रूप से आकर देते हुए बना डाली थीं। आज आलूबुखारे के दो पेड़ों के थाँवले बनाने शेष थे। उसका जोश आसमानी पींगें भर रहा था। वह कभी बगीचे के इस कोने में कुछ सफाई करता दिखता, तो दूसरे ही पल बगीचे के दूसरे सिरे पर अंगूर की बेल को सुलझाता हुआ, आम के तने पर उसकी फुनगियों और पत्तों को ठीक से बैठाता नजर आता। कभी वह एकाएक गायब हो जाता। न इधर नजर आता, न उधर और कभी सहसा ही घनी झाड़ियों में से पत्तों को खड़खड़ाता प्रगट हो जाता। वह माली कम, पेड़ अधिक लगता था - एक चलता-फिरता, हरा-भरा, खिला-खिला, झूमता पेड़! मैंने पेड़-पौधों से इतना अधिक लगाव रखने वाला माली इससे पहले नहीं देखा था। पेड़, पौधों, फूलों में जैसे उसके प्राण बसते थे। इसलिए ही अक्सर मुझे वह पेड़, पौधों और फूलों का प्रतिरूप नजर आता था। खाने पीने की सुध-बुध खोए, जिस तल्लीनता से वह बगीचे में लगा रहता था, उससे वह कभी-कभी मेरे लिए खीझ का कारण भी बन जाता; क्योंकि मुझे उसकी चिन्ता सताती थी कि यदि इसी तरह वह अपनी ओर से लापरवाह रहा, तो शीघ्र ही उसका शरीर जवाब दे जायेगा। एक दिन तो मुझे उस पर इतना क्रोध आया कि मेरा मन किया कि मैं उसे बगीचे में ही एक पेड़ के पास खड़ा करके, चारो ओर थाँवला बनाकर रोप दूँ, उसे वहीं जमा दूँ। क्योंकि शाम के 5 बजे तक उसका खाना बासी होकर, चींटियों की भेंट चढ़ गया था; कपड़े में लिपटी मोटी-मोटी रोटियाँ सूखी कड़क हो गई थी। जब 'चम्पा' किसी काम से, उसके पास गई तो पता चला कि गुलाब सिंह को रोटी खाने की सुध ही नहीं रही और खाना चींटियों की और कुछ चिड़ियों, कौवों की दावत बन गया।

'गुलाब सिंह' का नाम उसके पिता 'गेंदा' ने बड़े चाव से रखा था। जिस दिन वह पैदा हुआ था, ठीक उसी दिन उनके झोपड़े के पीछे की बाड़ी में एक बहुत ही सुन्दर लाल गुलाब खिला था। धरती पर एक साथ दो फूल खिले थे उस दिन! इधर घर में गेंदे के प्यारे बेटे 'गुलाब' ने अपनी नन्हीं नन्हीं जुगनू सी आँखे खोली, उधर बाड़ी में 'गुलाब' ने अपनी पँखुड़ियाँ खोली । बस, उस दिन से ही वह 'गुलाब' के नाम से पुकारा जाने लगा।

मैंने बालकनी में कॉफी पीते हुए, गुलाब सिंह की 17 वर्षीय बेटी चम्पा को इशारे से अपने पास बुलाया और खोजबीन करनी चाही कि बात क्या है जो गुलाब सिंह जी इतने कूदे-कूदे बगीचे में फिर रहे हैं? यूँ तो रोज ही बगीचे के लिए उसके सेवा भाव में कोई कमी नहीं रहती, पर आज तो सेवा भाव सवासेर बढ़ा चढ़ा है।

चम्पा ने उचक कर आँखो से बापू की, बालकनी से दूरी की तहकीकात की और फिर रहस्य का पर्दाफाश करती बोली- कल दो नए फूल के पौधों- 'सूरजमुखी' और 'डेहलिया' - दोनों पर फूली-फूली कलियाँ जो निकल कर आयीं है, वे खिलेगीं। बापू उसी की तैयारी में लगा है।

"ओह" सहसा ही मेरे मुँह से निकला और मैं उत्सुकता से भरी, वह सोचने लगी कि कल गुलाब सिंह क्या करेगा? क्योंकि उस तरह की तैयारी मेरे लिए अचरज की ही बात थी। इससे पहले, ट्रान्सफर होकर, मैं जहाँ भी गई और जो भी माली मुझे मिले, मैंने उन्हें फूलों के खिलने पर, कुछ तैयारी करते कभी नहीं देखा था। सो मेरे लिए तो 'गुलाब सिंह' और उसकी 'तैयारियाँ' लगभग एक अजूबे की तरह थीं। तभी चम्पा पलट कर मेरे पास आई और मुझे सचेत करती बोली - "आप बापू से मत बोलना कि मैंने आपको कुछ बताया। बापू ने घर में भी सबको बोल रखा है कि किसी से कुछ नहीं कहना है। बस, 'खुसी' की खबर, उसी दिन सबको मिलेगी, जिस दिन 'खुसी' की बात होगी। वरना सबकी नजर लग जायेगी पौधों को।"

"अच्छा ऐसा क्या? बापरे, बड़ा ज्ञानी है तेरा बापू तो" मेरे यह कहने पर, चम्पा गुलाबसिंह की तारीफ सुन" हाँ "कहती, खुशी से सिर हिलाने लगी। अपने पिता के ज्ञान पर सकारात्मक रूप से सिर हिलाकर, पक्की मुहर लगाने वाली चम्पा की भोली हरकत पर, मैं खिलखिला कर हँस पड़ी। मेरे हँसने पर उस नादान को लगा कि उसने कोई बड़ी अच्छी हँसी की बात कही है तो वह भी मेरे साथ हँसने लगी। फिर तो मेरी हँसी का ठिकाना ही नहीं रहा।

अगले दिन सुबह 6 बजे क्या देखती हूँ कि गुलाब सिंह एक थाली में हल्दी, कुंकुम, धूपबत्ती, छोटे-छोटे बताशे और पेड़े रखे, मुझे प्रसाद देते हुए; प्रफुल्लता से भरा 'सूरजमुखी' और 'डेहलिया' के खिलने का शुभ समाचार कुछ इस अन्दाज में मुझे दे रहा था - जैसे धरती ने फूलों को नहीं, वरन् दो नन्हे मुन्ने बच्चों को जन्म दिया हो! मुझे सच में उस पर गर्व हुआ। इसे कहते हैं सम्वेदनशीलता, इसे कहते हैं निष्ठा, लगन, सच्चा प्यार !गुलाब सिंह की सम्वेदनशीलता ने तो फूलों-पौधों में मानो दुगुनी जान डाल दी थी। आज जहाँ लोग इंसान को इंसान नहीं समझते, परस्पर नारकीय व्यवहार करते हैं, वहीं उसी दुनिया में रहने वाला, भौतिक दृष्टि से विपन्न, भावों और सम्वेदनाओं से सम्पन्न, गुलाब सिंह इतना उदात्त मनस है कि फूलों का जन्मोत्सव मनाता है। बाकायदा हल्दी, कुंकुम और अक्षत से पूजा-अर्चन कर, उनका स्वागत करता है, सबका मुँह मीठा कराता है। उसकी यह सीधी सादी मिठाई उस महँगी, सुसज्जित मिठाई से चौगुनी मीठी और पवित्र भाव पूरित है, जो बेमन से लोग खास-खास मौंकों पर एक दूसरे को दिखावे की होड़ में देते हैं।

आज दीपावली है। माधवीबाई ने घर की जम कर साज सफाई की है। बिजलीवाला घर के बाहर, दरवाजों और खिड़कियों पर नन्हे-नन्हे बल्बों की रंग बिरंगी लड़ें टाँग रहा है। मैंने गुलाबसिंह को एक अप्रत्याशित खुशी देने के लिए बगीचे की झाड़ियों और पेड़ों पर भी बल्बों की रंगीन लड़ियाँ लगाने का विशेष आदेश बिजली वाले को दिया है। गुलाबसिंह भी आज अपने घर की सफाई और सजावट के लिए 12 बजे तक बगीचे में सफाई करके व पानी वगैरा देकर चला गया और शाम को फिर छः-सात बजे तक घर के मुख्य द्वार पर फूलों की माला व कमरे में ताजे फूलों के गुलदस्ते सजाने आयेगा। उस

समय रंगीन बल्बों की लड़ियों से जगमगाते बगीचे के पेड़ों और झाड़ियों को देखकर गुलाब सिंह के चेहरे की चमक, उसकी खुशी को वह देखना चाहती है। गुलाब सिंह को उस खुशी के रूप में मानो वह दीपावली का तोहफा देना चाहती है। लीक से हट कर ऐसा तोहफा, जो उस अनूठे इंसान के तन-मन में उत्फुल्लता और सच्ची खुशी के दीप जला दे।

शाम ठीक छः बजे गुलाब सिंह फूलों की मालाओं के साथ हाज़िर हो गया। फूलों और मालाओं से घर को सजाते-सजाते एक घन्टे से ऊपर बीत गया। जैसे ही अँधेरा घिरना शुरू हुआ, मैंने लड़ियों के दोनों स्विच दबा दिए। सारा घर और घर के साथ बगीचा भी झिलमिल लड़ियों से झलमला उठा। गुलाब सिंह तो अपने प्यारे बगीचे को यूँ चकमक, लकदक खूबसूरती से भरा देख, हक्का बक्का सा रह गया। उससे खुशी के मारे न हँसते बन पड़ा, न ही कुछ बोल उसके मुँह से निकले। बौराया-सा बगीचे में इस पेड़ से उस पेड़, इस क्यारी से उस क्यारी के पास, उस जगमग सौन्दर्य को निहारता घूमता रहा। किन्तु वह अपनी ओर से कुछ अजूबा न करे, भला ऐसा कैसे हो सकता था? अपने साथ लाए, मालाओं के थैले में से उसने दिए, बत्ती और सरसों के तेल की शीशी निकाली और हर क्यारी व पेड़ के पास एक-एक दिया रखकर, एक जलती हुई मोमबत्ती से उन्हें दीपित कर, बगीचे की साज सज्जा को चौगुना करने में तल्लीन हो गया। हाथ जोड़े खुशी से भरा, मेरे पास आकर, मेरे पैरों को श्रद्धा से छूता हुआ बोला - "दीदी जी, आपने तो बगिया को दुल्हिन जैसा सजा दिया। क्या सुन्दर दिख रही है बगिया ! बस एक दो फोटू खिंच जाते तो, सदा के लिए याद रह जाती। मुझे उसका सुझाव भा गया। मैंने एक-दो नहीं, बल्कि उसकी कई सारी फोटो बगीचे में खींच डाली। उसके बाद से तो फोटो का विचार ऐसा उसके मन में ऐसा घर कर गया कि वह जब-तब फूल खिलने पर, फल आने पर वह अपनी फोटो खिंचवाता।

जनवरी की कड़ाकेदार सर्दी थी। मैं शॉल में लिपटी किसी काम से बाहर आई तो क्या देखती हूँ कि गुलाब सिंह एक पेड़ के नीचे बैठा रो रहा है खामोश गर्दन झुकाए, आँसू पोंछता, सुबकता, सबसे बेखबर कपड़े से मुँह ढके, चुपचुप रोए जा रहा है। मैंने तुरन्त, उसके पास पहुँच कर, प्यार से पूछा - "क्या बात है गुलाब सिंह? घर में सब ठीक तो है?"

वह चौंकता हुआ, धीरे से बोला " जी हाँ दीदी।"

"तो फिर रो क्यों रहे हो?" - मैंने पूछा।

पहले तो खामोश रहा, फिर अपने को सम्हालते हुए, आसूँ छिपाते हुए बोला "दीदी जी, बगीचे में तीन पौधे मर गए है। हमने तो पूरी तरह उनकी देखभाल की थी, पर पाले ने उन्हें मार डाला।"

मैं इधर उधर नजर दौड़ाती बोली "कहाँ है, कौन से पौधे ? दिखाओ तो"!

तो जवाब में मुँह लटकाए वह बोला "उन्हें तो हमने दफना भी दिया। हम उन्हें उखाड़कर कूड़े कचरे की तरह नहीं फेंकते । जहाँ मिट्टी में उन्हें दबाया है, अब वहाँ कुछ दिन बाद, हम नई पौध लगायेंगे। जब तक वहाँ नए पौधे नहीं जम जायेंगे, तब तक हमें कल नहीं पड़ेगी।"

मैंने एक गहरी निश्वास के साथ गुलाब सिंह को समझाने का प्रयास किया कि वह इस तरह रो-रो कर दुखी न होए। ऐसे रोने से मरे हुए पौधे ज़िन्दा थोड़े ही हो जायेंगे! धैर्य रखे और खिले फूल, हरे-भरे पौधों में अपना ध्यान बटाये। फिर भी उसकी उदासी नहीं गई। वह मेरे कहने से भारी कदमों से खुरपी हाथ में लिए उठा और क्यारियों की निराई करने लगा। मैं पोर्च की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सोचने लगी कि यह गुलाब सिंह भी सच में अनोखा ही व्यक्तित्व है, बड़ा ही भला और प्यारा इंसान है। माली तो बहुतेरे मिले, पर गुलाबसिंह जैसा न तो कभी मिला और न ही भविष्य में कहीं मिलेगा। तन, मन से प्रकृति को समर्पित ! उसके आँसू, उसकी मुस्कान, उसकी उदासी, उसकी खुशी सब इन पेड़ पौधों और फूलों में समायी है। उसकी तो दुनिया इन्हीं में बसी है। कोई पौधा मर जाता है या सूख जाता है तो मिनटों में उसकी दुनिया उजड़ी, उखड़ी हो जाती है। वाह रे, भोले, सरल मनस गुलाब सिंह, तू धन्य है, महान है ! मानवता का जीता जागता रूप है, प्यार की प्रतिमूर्ति है, प्रकृति के प्रति समर्पण की प्रतिकृति है, इसके प्रति अनूठे लगाव का प्रतिरूप है!

भीषण गर्मी ने बड़ी क्रूरता से समूची सृष्टि के मानो प्राण ही खींच लिए थे। पंछी बेजान से तपती दोपहरी में अपने घोंसलों में मुँह डाले पड़े थे। निरीह पशु बेसुध से जगह-जगह पेड़ों की, घरों की छाँह में दयनीय से बैठे थे। हरी, रेशमी घास, गर्मी की तपिश से सूखी और बदरंग नजर आने लगी थी। सभी बौराए से लगते थे। अगर नहीं बौराया था, तो वह था- फलों का राजा 'आम'। अमराईयाँ रसीले, पके आमों से लदी पड़ी थीं। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। मैंने सोचा इस भरी दोपहर में, 1.30पर, जब गर्मी अपने चरम पर होती है, कौन आया होगा? भला यह भी कोई आने का समय है ! न जाने कौन सिरफिरा है - मन ही मन खीझते हुए जैसे ही मैंने दरवाजा खोला तो पाया कि गुलाब सिंह फलों की टोकरी में बनारसी और दशहरी आमों की सौगात लिए मुस्कुराता, पसीने में तरबतर खड़ा है। मैंने आव देखा न ताव और मैं उस पर बुरी तरह बरस पड़ी - "तुम्हें इस दोपहरी में भी चैन नहीं है? दो पल आराम के तुम्हें बुरे लगते है? लू लग गई, ताप हो गया तो, हम सबका चैन हराम करके ही तुम्हें सुकून मिलेगा क्या?" मेरे ये ख्याल और प्यार से भरे 'तिक्त' शब्द सुनकर शान्त भाव को ओढ़े, बिना शिकन डाले, वह बड़ी सहजता से बोला - "दीदी जी, आज ही ये आम पक कर तैयार हुए है, तो पहला भोग भगवान को लगाकर, सीधे आपके पास लेकर आए है। हम इन्हें पानी में भिगो देते है। 2-1 घन्टे बाद आप इन्हें फ्रिज में रख देना। वरना ऐसे ही खा लिए तो गर्मी कर जायेंगे।"

मैं फिर तड़की "अरे, हमारी गर्मी का तो तुम्हें पूरा ख्याल है, कुछ अपना भी ध्यान कर लिया करो, तुम्हें गर्मी लग गई तो ये आम, बाग - बगीचा, सब आठ-आठ आँसू रोयेंगे ! क्या समझे ?" किन्तु वह खामोश, गर्दन झुकाए, मुस्कुराता काम में लगा रहा ।

फिर मैंने प्रश्न सूचक दृष्टि से उसे देखते हुए पूछा- "इस कड़कती गर्मी में कौन से मन्दिर में भगवान को भोग लगाकर आ रहे हो ? जाने के लिए ये ही समय मिला था ? सुधर जाओ गुलाब सिंह, सुधर जाओ!" मेरे यह पूछने पर जो उसने जवाब दिया, उसे सुनकर तो मैं ऐसी निरुत्तर हुई कि मैंने तौबा कर ली कि इस महारथी महानात्मा से अब कभी कुछ न कहूँगी। इसके साथ कोई डाँट फटकार नहीं करूँगी। इसके सोच, इसके मूल्य, इसके क्रिया कलाप, सच में, आम लोगों से थोड़े नहीं, बल्कि

बहुत हटकर है। गुलाब सिंह उस चिलचिलाती गर्मी में, मेरे घर से कुछ दूरी पर बने हुए उस छोटे से 'अनाथ आश्रम' में गया था, जहाँ 100 के लगभग बच्चे रहते हैं। उन्हें बगीचे के पके आमों का पहला भोग लगाकर वह मानो उन अनाथ बच्चों के रूप में, भगवान को भोग लगाकर आया था। माँ-बाप के प्यार से वंचित बच्चों को, उनकी इस उम्र में जब, उन्हें अच्छी-अच्छी स्वास्थ्यवर्द्धक चीजें मिलनी चाहिए, बल्कि यदि देखा जाए तो यही वह उम्र है जब बच्चों को तरह-तरह की चीजे खाने का चाव होता है, तो ऐसे अनाथ बच्चों को, हर मौसम के फलों का पहला भोग लगाना, दान करना, गुलाब सिंह अपना नैतिक कर्त्तव्य समझता था। उसके अनुसार बगीचे के फल खाकर, वे मासूम-अनाथ बच्चे तो तृप्त होते ही है, साथ ही फलदाता पेड़-पौधे भी मानों खुश और प्रफुल्लित होते है और गुलाब सिंह के अनुसार ऐसे दान से ही वे वृक्ष दिन दूने और रात चौगुने फलते -फूलते है। 'गरीब व दीन की सेवा, उनसे प्यार - भगवान की सेवा और भगवान से प्यार होता है' इस जगत् प्रसिद्ध आस्था को गुलाब सिंह ने सिद्धांत बना कर मात्र दिल में ही नहीं सँजों रखा था, अपितु उसे चरितार्थ भी करता था। भावों और सम्वेदनाओं से सम्पन्न मैं तो गुलाब सिंह की सोच, उसके दर्शन, उसके उदार नजरिए, उच्च मूल्यों से इतनी अधिक अभिभूत हुई कि उस दिन से मैंने किसी पर भी अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, शिक्षित-अशिक्षित, परिपक्व-अपरिपक्व की मुहर लगाना छोड दिया। उन्हें वर्गीकृत करना छोड दिया। मात्र किताबें पढ लेने से, डिग्रियाँ हासिल कर लेने से किसी की समझ और सोच जाग्रत नहीं होती। पूंजीपति होते हुए भी व्यक्ति, अनुदार और निर्बुद्धि होने के कारण गरीब माना जा सकता है। सच्चाई और अच्छाई, उदात्तता, समझदारी, दूरदृष्टि, बुद्धिमत्ता और शिक्षा-धन और किताबी ज्ञान की मोहताज नहीं होती। गुलाब सिंह इस सत्य का जीता जागता रूप था। जीवन में सब कुछ पा लेने पर भी, सारी कामनाएँ पूर्ण करने पर भी, अतृप्त रहने वाले, "और पाने की " लालसा में विघटित मूल्यों वालों के लिए गुलाब सिंह एक करारा जवाब था। समाज के लिए कुछ भी न कर पाने की विवशता जताने वालों के लिए एक ठोस उदाहरण था। अनुदार अमीरों को लज्जित करने वाली उदारता था। पेड़-पौधों, पशु-पक्षी और जरूरतमन्दों का ममता और प्यार से भरा भगवान था। मनुष्यता की, इंसानियत की अनूठी मिसाल था। यदि समाज में हर दूसरा आदमी गुलाब सिंह हो जाए तो सच में धरती पर स्वर्ग उतर आए।

कोई लौटा दे मेरे बचपन को....

डॉ. बासुदेव प्रसाद

याद आती हैं बचपन की वो रातें....
जब मैं मिट्टी के तेल के लालटेन में पढ़ा करता था
पढ़ने से जब मन उचट जाता तब आकाश के चाँद-सितारों को गिना करता था
घड़ी थी नहीं, ध्रुव तारा को देख कर समय की परिधि को जान लेता था
लालटेन की रोशनी धीमी कर ४-५ घंटे सोने के लिए चादर तान लेता था
फिर भोर का तारा देखकर आंखें मलते उठ जाता
समय की डोर को डूबते सितारों की छोर से जान लेता था
और गद्य-पद्य विज्ञान के प्रश्नों को कंठाग्र कर लेता था
स्मरण शक्ति तेज हुआ करती थी
अच्छे सत्संग, धर्म-कर्म और गुरुजनों के संस्कार का प्रभाव था
यद्यपि बचपन में काफी चीजों का अभाव था
प्रातः के बसंत में कोयल की कूंक हुआ करती थी
मन साफ हुआ करता था
दूरबीन नहीं था परन्तु आसमान साफ़ हुआ करता था
उषा के कलिंदों पर लज्जा की लाली हुआ करती थी
सौरभ समीर में लपक-झपक था
प्रकृति में हरियाली हुआ करती थी
आकाश और पाताल में परिराभमय परिरंभन था
ईश्वर जीव और प्रकृति में एक अभिनन्दन था
हम पाएजामे में होते थे परंतु चंदा मामा की बांहों में सोते थे
पवित्र गंगा मैया के स्वच्छ निष्कलुष जल में पाँव पखारते थे
अपने पितृजनों देवी-देवताओं की आरती उतारते थे
ईश्वर से हम डरते थे, एक संस्कार था
धर्म और संस्कृति का एक परिष्कार था

समय ने धीरे-धीरे करवट लिया
बचपन आज ५५ से गुजर कर बुढ़ापा की और अग्रसर हो गया है
समय तो पहले भी चलायमान था आज तेजी से चलायमान हो गया है
इसलिए कि आज हमारे पास ऍटम बॅम के साथ ऍटमी क्लाक आ गया है
परन्तु हमारे पास समय नहीं कि हम समय आँक सकें
अपने अंदर झांक सकें, लोगों का सुख दुःख बाँट सकें
ईश्वर जीव और प्रकृति का सामंजस्य आज ख़तम हो रहा है
हम अपने आपमें केंद्रित हो चुके हैं
सद्गुण और हमारा संस्कार तिरोहित हो रहा है
हमारी स्मरण शक्ति को अलजायमर का रोग लग गया है
पहले चीनी मिलती नहीं थी, आज चीनी का रोग लग गया है
आज हब्बल दूरबीन है परन्तु आँखों पर मोटा चश्मा है
गिनती आती है, परन्तु उन चाँद -सितारों को
सुबह और शाम के तारों को हम गिन नहीं सकते
गंगा जल से निर्वाण मिला करता था जीवन को
कभी स्वर्ग का परिधान मिला करता था
आज राम की गंगा मैली हो गयी है
हम चंद्रयान चला रहे हैं
पर गंगा-सफाई अभियान भी चला रहे हैं
समय की कैसी विडंबना है
आज हम कितने विपन्न हो गए हैं
काश कोई लौटा दे मेरे बचपन को आज....

जेहिं गिरि चरण देइ हनुमंता

मनोज कुमार श्रीवास्तव

जेहिं गिरि चरण देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता।।
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भांति चलेउ हनुमाना।।
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी।।

जिस पर्वत पर हनुमानजी पैर रखकर चले, वह तुरंत ही पाताल में धँस गया। जैसे श्री रघुनाथजी का अमोघ बाण चलता है, उसी तरह हनुमानजी चले। समुद्र ने उन्हें श्री रघुनाथजी का दूत समझकर मैनाक पर्वत से कहा हे मैनाक! तू इसकी थकावट दूर करने वाला हो (अर्थात अपने ऊपर इन्हें विश्राम दे)।

द न्यूयार्क टाइम्स की 15 फरवरी 1882 की एक खबर है। उत्तरी कैरोलाइना में बाल्ड पर्वत के बारे में। अचानक एक भीषण क्रेश की आवाज बास्करविले निवासियों को सुनाई पड़ी, मीलों दूर तक बाल्ड पर्वत का आधा मील बराबर शिखर यकायक गायब हो गया। यह समाचार। और देखें, एक सुसमाचार बाइबिल में मैथ्यू (17:20 NKJV) में प्रभु यीशु कहते हैं। "For assuredly, I say to you, If you have faith as a mustard seed, you will say to this mountain, Move from here to there, and it will move; and nothing will be impossible for you.' कुरान में एक सूरा कहता है : Call to mind also when we entered into a covenant with you, and lifted up the mountain over you- "Take hold", said we. इन्हीं सब सुसमाचारों के बाद कुछ बेरहम खबरें। तीन दिसंबर 2007 को गूगल अर्थ ने 470 पर्वत शिखरों के गायब हो जाने की रिपोर्ट दी। संयुक्त राष्ट्र को प्रस्तुत एक रिपोर्ट में यह कहा गया कि डीप-सी ट्रालिंग से सामुद्रिक पर्वतों को नुकसान हो रहा है। इस रपट के अनुसार दुनिया में एक लाख से अधिक सी-माउंट्स हैं। लेकिन वैज्ञानिक डाटा सिर्फ 40 का ही उपलब्ध है। अधिकतर समुद्री पर्वत डीप-सी ट्रालिंग से क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। क्या हनुमान के पैरों के भार से भी समुद्री पर्वतों को यही नुकसान हो रहा था? और उनकी बाहर निकली हुई 'टिप' पानी में समाती जा रही थी? लेकिन हनुमान तो प्रकृति पुत्र हैं। उनके हाथों अनजाने में भी ऐसा कैसे हो सकता है? जो अभी तट पर छूटे अपने साथियों को कंद मूल फल जैसी नैसर्गिक चीजें खाने की राय दे रहा था, क्या वह निसर्ग के प्रति किसी तरह के चरण-स्कन्दन की दृष्टि रखेगा। किसी चीज को पैरों तले कुचलने की? वह हनुमान का पदन्यास है, पद-दलन नहीं। इसलिए तुलसी ने 'चरन देइ' शब्द का प्रयोग किया है, ताकि उसे किसी तरह की पायमाली के अर्थ में नहीं लिया जाये। हनुमान रौंदने वालों में नहीं है। वे तो परित्राण करते हैं, उबारते हैं, परिमोक्ष देते हैं। इसलिए उनके यहाँ 'गिरि' को एक व्यक्तित्व-सा देते हुए यह कहा गया है कि वह तुरन्त पाताल को चला गया। यह जैसे चरण स्पर्श के बाद प्रस्थान की बात है। ई. लॅ जोली का कहना है कि Nature is a ladder, a means of ascending higher, leading to the creator. ये पर्वत प्रकृति की वैसी ही सीढ़ी हैं।

हनुमान उनसे गुजरते हुये अधिक से अधिक उत्कर्ष को प्राप्त करते हैं। लेकिन अपना उत्कर्ष वे किसी के उद्दमन में नहीं पायेंगे। उनका पादक्षेप उनके भीतर के संगीत, उनके अंत: राग, उनकी लय के अनुक्रम में है। गिरि का संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ में एक अर्थ बादल भी दिया हुआ है। इसलिये पर्वतों पर पाँव भी वे ऐसे रखते होंगे जैसे बादलों पर रख रहे हों। 'हरषि हियँ धरि रघुनाथा' चले हैं तो पाँव तो वैसे भी जमीन पर न पड़ते होंगे। बाइबल की पूर्व उद्धृत उक्ति कहती है कि विश्वास के बल पर आप पर्वतों को मूव कर सकते हो तो 'बार-बार रघुबीर सँभारी' वाले हनुमान के चरण छूकर पर्वत भी पाताल मूव कर जाते होंगे। लेकिन लैंडस्केप और कथा-चरित्र के बीच किसी तरह के शक्ति-संबंध की स्थापना, कि हनुमान को किसी विजय-भाव का अनुभव हो, तुलसी का उद्देश्य नहीं है। ये पर्वत उनके लिये सत्ता के सोपान (pedestals of power) नहीं है।

साइमन स्कैमा ने अपने एक निबंध 'लैंडस्केप एन्ड मेमोरी' में लिखा है कि पर्वतों को मनुष्य की छवि में ढालना लंबे समय से दुनिया की कई संस्कृतियों का काम रहा है। दुनिया के कई देशों में पर्वत-पौराणिकी प्रचलित रही है। चीन में कुनलुन नामक पहाड़ है जहाँ स्वर्ग-सम्राट और 100 देवताओं का निवास है। कुनलुन अमरता का स्थान है। एंडीज पर्वत श्रृँखला के कई शिखर आज भी पूजे जाते हैं। मसलन माउंट औसांगेट। पेरू में क्यौल्लुर रिट आई तीर्थयात्रा आज भी चलती है। ग्रीक मिथकों में ओलंपस पर्वत भी देवस्थली माना गया। देसी अमेरिकी मिथकों (काउलिट्ज इंडियन्स की लोककथाओं) में रैनियर पर्वत की कथा चलती है जिसकी दो पत्नियां थीं- एडम्स गिरि और सेंट हेलेन्स गिरि। एक बार दोनों पत्नियों में वाद-विवाद हो गया। सेंट हेलेंस गिरि क्रुद्ध और ईर्ष्यालु हो गई, उसने अपना 'टॉप' गिराया और रेनियर पर्वत का सिर उड़ा दिया। बाइबल बताती है कि जेरीजीम पर्वत समरिटन की आस्था और पूजा का केंद्र था। भारत में भी पर्वतों का भारी जिक्र रामायण-महाभारत-पुराणों आदि में है। इस मामले में शायद हम सबसे ज्यादा समृद्ध हैं। हमारे यहाँ पर्वतों का साधारण उल्लेख, जैसा कि इस पंक्ति में है, भी मिलता है और ऐसे पर्वतों का उल्लेख भी है कि जिनका अपना व्यक्तित्व और पहचान है। यहाँ तो बस इतनी सी बात है कि हनुमान जिस पर्वत पर चरण रख दे रहे हैं, वह धँसकर पाताल चला जाता है। यह हनुमान जैसे पर्वतारोही की असीम क्षमता है। विलियम आर्थर वार्ड नहीं कहते थे कि 'एक सच्चा पर्वतारोही पर्वत से भयभीत ((intimidated) नहीं होता, वह तो उनसे प्रेरित होता है। पर्वत जीतने के लिये बनाये गये हैं- "Mountains are created to be conquered"' हनुमान भी निर्भीक हैं पर्वतों के सामने। एक के बाद राह में आये पर्वतों पर वे उदारता की जीत हासिल करते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं। विलियम ब्लेक की कविता भी कुछ ऐसी ही थी : Great things are done when men and mountains meet/This is not done by jostling in the street. तो यहाँ वही हो रहा है। 'हनुमैन' माउंटेंस से मिल रहे हैं। पर्वत उनके चरण छूकर पाताल लोकवासी हो रहे हैं। हनुमान को पर्वतों पर डी.एच. लॉरेन्स की तरह गुस्सा नहीं आता। लॉरेन्स कहता था : I can't do with mountains at close quarters - they are always in the way, and they are so stupid, never moving and never doing anything but obtrude themselves. लेकिन तुलसी के सुंदरकांड के पर्वत इतने 'स्टुपिड' नहीं हैं। वे तो रास्ते में भी नहीं खड़े रहते, पाताल चले जाते

हैं। वे 'नेवर मूविंग' की श्रेणी में नहीं हैं। वे 'बाधा' भी नहीं हैं। लगता है जैसे इन पहाड़ों का एक जीवन है। उनकी एक सप्राण अनुक्रिया-प्रणाली है। फ्रेडरिक नीत्शे मजाक में कहता था In the mountains, the shortest way is from peak to peak but for that you must have long legs. हनुमान के पास लगता है वही 'लंबे पैर' हैं। इसलिये 'जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता' की बात आई है। हनुमान की एक विराट काज्मिक उपस्थिति सी इस प्रसंग में दिखाई गई है। हैती में एक कहावत चलती है कि पर्वतों के पार फिर पर्वत हैं। वह हालत यहाँ हो रही है और हनुमान एक के बाद एक पर्वतों को पार करते हुए जा रहे हैं। हनुमान के सिलसिले में ऐसा लगता है कि जैसे प्रकृति भी उनको सहयोग कर रही है। जैसे प्रकृति को भी उनकी सदाशयता और उदात्तता का पता है और वह उनकी राह में उलझनें पैदा करने की जगह उनके काम को ज्यादा से ज्यादा सुसाध्य और सुकर बनाना चाहती है।

जी.जे. योर्के ने कहीं लिखा है कि Mountains to us are what we image them to be and not what they are. अर्थात 'पर्वत हमारे लिये वही है, हम अपनी कल्पना में जैसी उनकी छवि देखते हैं और न कि वैसे-जैसे वे हैं।' इस सिद्धांत के बाद सुंदरकांड की इन पक्तियों को पढ़ें तो हमारा काम ज्यादा अच्छा बन पड़ेगा। तब बहुत से नये आयाम खुलेंगे और ये गिरि वैसे गिरि नहीं रह जायेंगे। न महेंद्र पर्वत वैसे रहेगा न मैनाक। सवाल यह आयेगा कि क्या तुलसी की कविता में आये ऐसे उल्लेखों को हम सिर्फ अतिशयोक्ति मानें और एक काव्यालंकार की तरह इसे बरतकर बात वहीं खत्म कर दें? या कि इसे एंथ्रोपोमार्फिज्म का प्रकार मानें और जगती व जीवन के रहस्यों को समझने की एक नई दृष्टि मानें? एक हालिया अंग्रेजी कवि की पर्वत पर लिखी एक कविता से हम इसे और अच्छी तरह समझ पायेंगे :

"Anthropomorphism has its place.
It's a starting point at least.
So I'll say if I have eyes, then a mountain has eyes
and whatever happens after that is poetry
where I become lost
and there are no conditions, no consequences.
There only the mountain.
I am the Mountain.
I go into these hills as into my self
leaves fallen from trees are my skin.
Watery springs gossip sweet news,
gurgling falling from my throat,
calling, calling, calling : come,
always, I AM here, I AM/Mountain all around, above, below and within.
Come, I AM/singing, the sound

that is always here ....."

इलैन मारिया अप्टन की लिखी यह कविता पर्वत को भी जैसे एक आत्म, एक व्यक्तित्व देती है। तुलसी के संसार में भी पर्वत जैसे निष्प्राण तत्व भी जैसे सस्पन्द हो जाते हैं। जैसे तुलसी की आँखें हैं तो पर्वतों की भी आँखें हो जाती हैं। जैसे तुलसी हनुमान के पैर छूते हैं, पर्वत हनुमान के पैर छूकर धन्य हो जाते हैं। जैसे तुलसी और प्रकृति के तत्वों के बीच जब यह एकात्म स्थापित हो जाता है तो जो कुछ बचता है, उस सबके बाद, तो वह सिर्फ कविता है। मानवीय गुणों का सन्निधान भौतिक वस्तुओं में कर दिखाने वाला यह एंथ्रोपोमार्फिज्म (नृरूपवाद) संवेदना का एक स्तर है। हो सकता है कि नृरूपनिषेध (anthropodenial) ज्यादा तार्किक लगता हो, लेकिन इस एंथ्रोपोमार्फिज्म का एक हाइपरतर्क है। वह बाइबल में ही नहीं है बल्कि जार्ज आरवेल के एनीमल फार्म जैसे आधुनिक उपन्यासों तक में है। तुलसी संवेदना की जिस परंपरा में पोषित हुये थे वहाँ यह बिल्कुल भी अटपटा नहीं लगता था कि स्वयं जलनिधि कुछ कहे, स्वयं मैनाक पर्वत कोई अनुक्रिया करे। स्वयं जूडाइज्म में पर्वतों को झगड़ा करते हुए बताया गया है। जब पर्वतों ने सुना कि भगवान किसी पर्वत पर 'तोराह देंगे' तो उनमें लड़ाई होने लगी। हरेक ने कहा कि भगवान तोराह मुझ पर देंगे। पर्वत अपनी-अपनी जगहों से स्पर्धा में भागने लगे। टेबर पर्वत ने कारमेल पर्वत से कहा कि तुम अपनी जगह लौटो क्योंकि भगवान ने तुम्हें नहीं बुलाया। कारमेल पर्वत ने उलटकर यही टेबर को कहा कि तुम्हें वापस लौटना चाहिये क्योंकि भगवान ने तुम्हें नहीं बुलाया। भगवान ने उनका झगड़ा सुना। बोले - तुम लोग आपस में क्यों झगड़ते हो? मैंने तो सिनाई पर्वत को चुना है।

एल्डो लिओपोल्ड का एक प्रसिद्ध निबंध है - 'थिंकिंग लाइक अ माउंटेन' (पर्वत की तरह सोचते हुए)। इस निबंध में वे भूगर्भीय (जिओलॉजिकल) के प्रति समानुभूति का आग्रह करते हैं। आजकल जो पर्यावरणीय नैतिकता का आंदोलन चला है, उसका आग्रह भी कमोबेश यही है। लिओपोल्ड का निबंध शुरू होता है एक सुदूर कैनयन में 'प्रत्येक जीवित वस्तु' जिस-जिस तरह से भेड़िए की गुर्राहट को सुनती है, उन सबके एक रोमांटिक रिकन्स्ट्रक्शन से। फिर लिओपोल्ड कहता है कि सिर्फ पर्वत ही इतना लंबा जिया है कि भेड़िए की गुर्राहट को 'आब्जेक्टिवली' सुन सके। पर्वत मानवीय गति (पेस) पर नहीं चलते, लेकिन उनकी अपनी चेतना है। वे अतिमानवीय (सुपरह्यूमन) हैं, और एक संक्षिप्त लेकिन संघनित इतिहासीकृत मानवीय क्षितिज की पृष्ठभूमि में ज्यादा देर तक 'जीते' हैं। उनके पास एक 'ज्यादा गहरा अभिप्राय' है। और चीजों, प्राणियों, संघटनाओं के प्रति 'सीक्रेट अभिमत' भी है। तुलसी के पर्वत भी ऐसे ही लगते हैं। पर्वत को मानव के रूप में देखने वाली तुलसी-दृष्टि ग्रीक शिल्पज्ञ डाइनोक्रेट्स की उस दृष्टि से एकदम भिन्न पड़ती है जो आल्थोस पर्वत को मानव आकार में काट-छाँटना चाहता था। यह दृष्टि उन तालिबान के भी विरुद्ध है जो बामियान पर्वत की बुद्ध प्रतिमाओं को तोड़ने-फोड़ने में संतोष करते हैं। यह दृष्टि मानती है कि पर्वत देखते हैं। यह दृष्टि मानती है कि वे हम पर निर्णय भी करते हैं।

लेकिन तुलसी पर्वत की कोई अहंतामूलक लंबवतीयता (egotistical verticality) की छवि नहीं खींचते। वे पर्वत को किसी ऐसी टोपोग्राफिकल टेमेरिटी (भौगोलिक दुस्साहस) के रूप में देखते ही नहीं कि जो किसी तरह की पृथक सुप्रीमेसी की संस्मृति है बल्कि ऐसा देखते हैं मानो वह भगवद्कार्य में लगे हनुमान की सहायक उपस्थिति है। इसलिये गिरिश्रृँग हनुमान के चरणों का संस्पर्श पाकर पाताल चले जाते हैं या मैनाक पर्वत विश्रांतिस्थल के अवसर की तरह उभरते हैं। पर्वत महाकारिता

(gigantism) के प्रतीक न रहकर सहकारिता के प्रतीक बन जाते हैं। तुलसी जैसे एक तरह का 'करेक्शन फॉर स्केल' कर रहे हैं। आकार की वृहत्ता का सवाल जैसे गायब हो जाता है। सम्बन्ध की महत्ता ही जैसे नाभिक पर आ जाती है। पर्वत भी जैसे उसी भगवद् परिवार का सदस्य बने दीख पड़ते हैं। यह हनुमान की ग्रीन रिलेशनशिप, हनुमान की हरित रिश्तेदारी है। राजेश जोशी की एक कविता है : 'स्वप्न अगर आसमान में थे/तो पहाड़ों के सबसे करीब थे/स्वप्न अगर कहीं लुककर बैठ गए थे/तो हमें विश्वास था/वे पहाड़ों में कहीं छुपे होंगे/हम स्वप्नों की खोज में गये थे/पहाड़ों की ओर/और हम जानते थे/पहाड़ दोगले नहीं हुये हैं/वे हमारी हिफाजत करते रहेंगे।' चीनी क्रांति का इतिहास देखें तो उसमें चिङ-काङ-शान पहाड़ एक प्रतीक चिन्ह की तरह उभरते हैं। माओत्से-तुङ्ग ने अपनी विख्यात कविता 'चिङ-काङ-शान पर फिर से चढ़ते हुए' लिखकर पूंजीवादियों से संघर्ष का रास्ता बुलंद किया था। पर्वत हनुमान के जरिए गति को प्राप्त होते हैं। और हनुमान स्वयं गति प्राप्त करते हैं। लेकिन 'जिमि अमोघ रघुपति कर बाना/एही भांति चलेउ हनुमाना' में चलने के कारण संभवत: हमें गति का इम्प्रेशन आता है जबकि 'जिमि अमोघ' पर ध्यान दें तो संभवत: हम देख सकेंगे कि तुलसी स्पीड की नहीं, एक्यूरेसी की बात कर रहे हैं। गति की ही नहीं, दिशा की भी बात कर रहे हैं। वाल्मीकि ने गति पर ध्यान दिया है, तुलसी ने एक्यूरेसी पर। वाल्मीकि कहते हैं: "जैसे श्रीरामचंद्रजी का छोड़ा हुआ वाण वायुवेग से चलता है, उसी प्रकार मैं रावण की लंकापुरी में जाऊँगा। तुलसी उसे "अमोघ" कहते हैं क्योंकि उन्हें वायुवेग में कोई कविता नहीं लगती। पवनपुत्र तो पवनवेग से चलेंगे ही, उसमें रामचन्द्र जी का क्या? रामबाण की विशेषता तो उसका अमोघ होना ही है। हनुमान उसी की भाँति चले। बिरहोर तथा सन्थाल आदिवासियों की लोक कथा के अनुसार तो राम द्वारा चलाए गए बाण के आधार पर हनुमान ने समुद्र पार किया था। तुलसी के लिये डिफाइनिंग बात है : अमोघ होना, अचूक होना। लक्ष्याभिमुख होना। इसलिए गमन की कसौटी लक्ष्यानुगमन है। हनुमान दिङ् मूढ़ होकर नहीं चल रहे। हनुमान की पहचान क्या है? हनुमान स्वयं 'शरकरऋजु:' कहाने वाले भगवान राम की ओर से लक्ष्य की ओर ताककर छोड़ा हुआ बाण हैं। भगवान राम के हाथ में कमान है। भगवान के हाथ गुण हैं और उसी के आधार पर वे हनुमान का प्रक्षेपण करते हैं। धनुर्वेदी राम का सर्वश्रेष्ठ नरकुल है यह वानर। क्या राम को अपने किसी बाण के संधान में, चाहे वह शलाका हो या पुष्कर, वह संतोष मिला होगा जो हनुमान के प्रेषण में मिला। हनुमान राम की 'बेस्ट बेट' हैं। राम के बाण कभी नहीं चूकते। कभी निष्फल नहीं होते। वाल्मीकि रामायण में लिखा है : यथाराघवनिर्मुक्त: शर: श्वसनविक्रम:/...सर्वथा कृतकार्योऽसमेष्यामि सहसीतया: हनुमान भी कृतकार्य होकर ही लौटेंगे। उन्हें कोई अवरुद्ध नहीं कर सकेगा। हनुमान उन लोगों में से नहीं है जो स्पीड रिकार्ड बनाने में लगे हैं लेकिन जिन्हें यह पता नहीं कि वे जा कहाँ रहे हैं। हनुमान चले हैं तो उनकी वेलोसिटी की बात भी नहीं है, उनकी वैलिडिटी की भी बात है। लक्ष्यसिद्धि में उन्हें काम क्षिप्र तरीके से भी करना है और इस अहसास के साथ भी कि सफलता के अलावा और कुछ भी प्रेय नहीं है। वह सिर्फ गति का द्रुत होना ही नहीं है, वह प्रिसीजन भी है। 'एही भाँति' कहकर तुलसी हनुमान के चलने के बारे में किसी भी दूसरे उपमान का ही निषेध नहीं करते, किसी भी दूसरे प्रेरणा-बिन्दु और किसी भी दूसरे तौर-तरीके का भी निषेध करते हैं। दूसरे इस वाक्य के माध्यम से तुलसी सेवक और

सेव्य के बीच, भक्त और भगवान एक किस्म की empathic accuracy का होना भी स्पष्ट कर रहे हैं। यह मनोवैज्ञानिकों का इंटरपर्सनल रिअक्टिविटी इंडेक्स (IRI) है। रघुपति और हनुमान के बीच के रिश्ते जिस रसायन से संचालित हैं, हनुमान का प्रयाण भी उसी से संचालित है। राम हनुमान को जितनी अच्छी तरह 'पढ़' सकते हैं, उनकी अबोली भावनाओं को जितनी अच्छी तरह समझ सकते हैं, उन दोनों के बीच जो एक 'इंटरसब्जेक्टिव मीनिंग कांटेक्स्ट' (एक अंतर्निजीय अर्थ-संदर्भ) है- उसके चलते हनुमान का अपने बाण के रूप में शरव्य की ओर जो उत्क्षेपण होगा, वह व्यर्थ नहीं होने का। वह अपने उद्देश्य को उपलब्ध करेगा ही। 'धृतशरधनुषं' राम को मन में धारे चले हनुमान उतने ही अमोघ हो जाते हैं जितने राम के शर। 'आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्ग' (जिन्होंने संधान किया हुआ धनुष ले रखा है, जो बाण का स्पर्श कर रहे हैं तथा अक्षय बाणों से युक्त तूणीर लिये हुए हैं वे) राम के सर्वश्रेष्ठ आयुध हनुमान हैं। उन 'वरचापबाण हस्तं' राम को हृदय में धारण कर हनुमान जब लंका की ओर नभोगमन करते हैं तो वे किसी विपथगामिता की आशंका के दूर-दूर तक भी शिकार नहीं होंगे। राम 'निषंगचापसायकं' हैं, हनुमान के रूप में अपने अमोघ बाण का पुरस्सरण करते हुए।

अमोघ का एक अर्थ अपराजेय है। हनुमान भी अजेय होकर चले हैं। अमोघ का एक अर्थ है : "वह कि जिसका कोई विकल्प न हो।" हनुमान का कोई विकल्प नहीं है, यह किष्किंधाकांड में सम्पाती-भेंट के बाद वानर-दल में जो आपस में चर्चा हुई, उसमें स्पष्ट हो चुका है। "निज निज बल सब काहूँ भाषा/पार जाइ कर संसय राखा"- कि सब किसी ने अपना-अपना बल कहा, पर समुद्र के पार जाने में संदेह प्रकट किया। स्वयं ऋक्षराज जाम्बवान बोले- "जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा/नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा" कि अब मैं बूढ़ा हो गया। शरीर में पहले वाले बल का लेश भी नहीं रहा। अंगद ने कहा- "अंगद कहइ जाउँ मैं पारा/जियँ संसय कछु फिरती बारा"- कि मैं पार तो चला जाऊँगा परन्तु लौटते समय के लिये हृदय में कुछ संदेह है। कुल मिलाकर हनुमान ही एकमात्र और अद्वितीय विकल्प की तरह उभरे हैं। अत: वे अमोघ इस रूप में भी हैं। प्रोटो-इंडो-ईरानियन मिथकशास्त्र में अमोघ उसे कहते हैं जिसके कई शुभ गुण हों - मतलब जो स्वास्थ्य, प्रज्ञा और धन-धान्य का सुख देता हो। हनुमान भी सुखदाता हैं और रघुबीर के बाण तो मोक्षदाता हैं ही।

यह ध्यान दीजिये कि भारतीय जनमानस में रामबाण एक औषधि की तरह, एक अचूक औषधि की तरह प्रसिद्ध है। यह अजीब बात है कि संहारक शक्ति को एक उपचारक शक्ति के रूप में याद रखा जाये। व्याधियों का निदान करने में पूर्ण प्रभावी शक्ति के रूप में। जैसे अँग्रेजी भाषा में पैनासिआ शब्द है जो उपचार (हीलिंग) की ग्रीक देवी के नाम पर प्रचलित हुआ और अँग्रेजी भाषा में "हील-आल हर्ब" के अर्थ के लिये रूढ़ हो गया। एक ऐसी औषधि जो सभी बीमारियों को ठीक कर दे। खैर वह तो हमारे यहाँ के अश्विन कुमारों/धन्वन्तरी की तरह चिकित्सा के क्षेत्र की एक विशेषज्ञ प्रतिभा थी, लेकिन रामबाण के साथ बात ही दूसरी है। वह व्यक्ति नहीं है, अस्त्र है। एक आयुध आयुर्द्रव्य बन जाये, यह असाधारण बात है। ध्वंसास्त्र को आरोग्य के लिये जनस्वीकृति मिलना अनूठा है। वह भी मात्र प्रभावी औषधि की तरह ही नहीं, सभी तरह की आधि-व्याधियों का लक्ष्यवेधी निराकरण करने वाली दवा की तरह। क्या रावण और उसके राक्षस उस समय के सबसे बड़े दु:ख, दर्द, ताप, शाप थे? या रामबाण ही कुछ ऐसा था

जिसकी एक थिरेप्टिक वैल्यू थी? राम होने का अर्थ यही है कि जिसके वेपन क्योर भी करते हों? राम के स्तर से हम आज जैविक शस्त्रों के उस युग तक आ गये हैं जब अस्त्रों से व्याधियाँ फैलाई जाती हैं। कृमि-युद्ध का दौर, जब पैथोजेन्स (बैक्टीरिया वायरस आदि) के जरिये शत्रु-देशों से लड़ा जाता है। उसके ठीक कंट्रास्ट में रामबाण। ट्रोजन के युद्ध का ग्रीक शास्त्रों में जो विवरण मिलता है, वहाँ बाणों और भालों के अग्रभाग में विष मिलाने का भी जिक्र है जबकि रामबाण को लोग तमाम व्याधियों के विष से मुक्ति दिलाने वाले रूप में याद रखे हुये हैं। अब तो जो जैविक अस्त्र हैं वे एंथ्रेक्स, इबोला, प्लेग, हैजा, क्यू बुखार, टाइफस, पीला बुखार, जापानी बी एंसेफलाइटिस, स्मालपॉक्स, रिफ्ट वैली फीवर, माइकोसिस आदि-आदि कई बीमारियाँ फैला सकते हैं, लेकिन रामबाण पाप-ताप-शाप हारक बेचूक दवा के रूप में लोक-मन में जगह बनाये हुये हैं।

हनुमान उसी रामबाण की तरह प्रस्थित हुये। जगत का कल्याण करने वाली शक्ति की तरह। वे भी एक वंडर-ड्रग हैं। उनके चमत्कार आगे देखने में आयेंगे। जब सीता रावण को कहती है कि "खल सुधि नहिं रघुबीर बान की" - तो उनके शब्द बड़े प्राफेटिक हैं। रावण को वाकई नहीं पता है कि रघुबीर का छोड़ा हुआ यह एक बाण हनुमान के रूप में पहुँच गया है और सीता को रावण द्वारा दिये जा रहे त्रास का साक्षात् करने के बाद वह चुप नहीं बैठेगा। ऐसा सबक सिखाकर जायेगा कि बाद तक भी राक्षस याद रखें। हनुमान सीता को आश्वस्त भी रामबाण की स्मृति दिलाकर ही करते हैं : 'राम बान रबि उएँ जानकी/तम बरुथ कहँ जातुधान की' कि 'हे जानकी जी! रामबाण रूपी सूर्य के उदय होने पर राक्षसों की सेना रूपी अंधकार कहाँ रह सकता है।' यह बताता है कि स्वयं हनुमान को रामबाण पर कितना विश्वास है। हनुमान उसी रामबाण की तरह चले जिसकी सामर्थ्य पर उन्हें इतना भरोसा रहा आया।

प्रकृति हमारे सद्प्रयासों की खामोश साक्षी नहीं है। ऐसा नहीं है कि यदि हम रामकाज कर रहे हों तो प्रकृति उदासीन या निरपेक्ष रहेगी। यदि हम पूर्णत: सत्त्व बुद्धि के हैं तो प्रकृति हमारे काम के लिये आवश्यक ऊर्जा का संचार भी हममें करेगी और हमें मदद भी करेगी। जॉन म्यूर ने एक जगह लिखा है और साधारण परिस्थिति के मानव के लिये लिखा है : Climb the mountains and get their good tidings. Nature's pace will flow into you as sunshine flows into trees. The winds will blow their own freshness into you and the storms their energy, while cares drop off like autumn leaves. कि पहाड़ चढ़ो और उसके उपहारों का आस्वाद लो। प्रकृति की गति आपमें वैसे ही प्रवाहित होने लगेगी जैसे सूरज की चमक पेड़ों में प्रवहमान होती है। हवायें अपनी ताजगी तुममें फूंक देंगी और तूफान अपनी ऊर्जा जबकि चिंताएँ पतझड़ के पत्तों की तरह झर जायेंगी।' हनुमान के साथ यही हो रहा है। वे पहाड़ चढ़ लिये हैं। प्रकृति का आशीर्वाद उन्हें मिल रहा है। भगवान को प्रसन्न करने की ही बात नहीं है, भगवान ने भी हमें प्रसन्न करने में प्रकृति को नियोजित कर रखा है। समुद्र की तरंगें तट पर अठखेलियाँ कर रही हैं। दूर सूरज सिंधु में कहीं डूब-सा रहा है। ठंडी हवा के झोंके छूकर जा रहे हैं, आसमान पर कोई अरुण राग सा फैला हुआ है, दिन भर के श्रम के बाद पंछी वापस अपने नीड़ों में जा रहे हैं कतारबद्ध होकर और उनकी उड़ान के पैटर्न से दिङ्मंडल पर मुस्कान सी बिखरती है, पृथ्वी की कविता कभी खत्म हुई-सी नहीं लगती। क्या ये सब प्रमाण नहीं है कि ईश्वर हनुमान के हृदय में है और उनके साथ-साथ चल रहा है। हनुमान रघुपति के दूत

हैं। वे भगवान का संदेश लेकर जा रहे हैं। निरन्तर पूरी तन्मयता से रामकाज की दिशा में प्रवहमान व्यक्ति को प्रकृति भी पहचान लेती है। 'निकल रही थी मर्म वेदना/करुणा विकल कहानी सी/उधर अकेली प्रकृति सुन रही/हँसती सी पहचानी सी' - जयशंकर प्रसाद की कामायनी में यह 'पहचान' की बात प्रकृति के संदर्भ में एक भिन्न प्रसंग में आई है जब वेदना की बात है। हनुमान तो हर्ष और उत्साह से भरे जा रहे हैं। प्रकृति तब उन्हें भी अकेली सुन रही है। प्रकृति तब भी उन्हें पहचान पा रही है कि वे रामदूत हैं। प्रकृति हमें लगातार अपने लाभांशों का वितरण करना चाहती है। प्रकृति के बैंक्स (किनारे) हमें हमारा बैलेन्स (संतुलन) लौटाते हैं, हमें तरुओं के हिलने से मिल रही हवा में आय होती है - हमें जो अपने डिविडेंड्स, अपने बैंक बेलेंस और अपनी आय का हिसाब किताब करने में मुब्तिला हैं। हम जो हनुमान की तरह रामकाज में नहीं लगे, अपनी स्वार्थपरता में रत हैं, उन तक पर प्रकृति के आशीष शांत भाव से बरसते रहते हैं, भले ही हममें उन आशीषों का आस्वाद लेने की संवेदना न हो। रघुपतिदूत हनुमान तो 'मोस्ट डिज़र्विंग' हैं। तब प्रकृति अपनी जीवनदायी, ऊष्मादायी, सुखदायी भूमिका का निर्वाह क्यों न करे? प्रकृति क्यों न उनका विचार करे? क्यों न उन्हें पहचाने? क्या सिर्फ मनुष्य के पास ही काग्निटिव साइंस है? क्या प्रकृति की अपनी प्रज्ञा नहीं है? क्या जब हम मैदानों को देखते हैं तो कभी हमें यह ख्याल आता है कि यह मैदान भी हमें देख रहा होगा? क्या जब हम जंगल से आती हुई ध्वनियों को सुनते हैं तो कभी हमें यह अहसास होता है कि जंगल भी कहीं हमें सुन रहा होगा - हमारी सांसों की आहट को, हमारी पदचाप को? क्या हम ही फूलों को देखकर कविता लिखते हैं या कि पांखुरियों के ऊपर भी कोई उद्गीथ अंकित है? क्या सिर्फ 'सरमन ऑन माउंटेन' ही घटित हुआ, पर्वत पर प्रवचन कि एक गीता तरुओं में और तितलियों में, बादलों में और सितारों में, पत्थरों में और नदियों में कहीं गूँज रही है? प्रकृति की अपनी प्रज्ञा है। प्रकृति का अपना काग्नीशन। हनुमान की रिकाग्नीशन या पहचान भी उसी में से संभव होती है। समुद्र पहचान लेता है कि ये हनुमान हैं, रघुपति के दूत और मैनाक पर्वत को सलाह देता है कि वह हनुमान के श्रम और क्लान्ति का हरण करे। मैनाक पर्वत की कथा तुलसी ने तो अति संक्षेप में कही है, वाल्मीकि ने विस्तार में कही है। मैनाक का एक नाम गिरिसुत भी है। पर्वत पुत्र को पवनपुत्र की परिश्रान्ति को दूर करना है। इतनी दूरी तय की है हनुमान ने कि प्रकृति को भी लगने लगता है कि अब थक गये होंगे वे। अब थोड़ा निढाल हो गये होंगे वे। इतना उद्यम किया है। इतनी जीतोड़ कोशिश की है, खुद प्रकृति गवाह है, खुद यह समुद्र साक्षी है। देख रहा है वह हनुमान का उद्योग, उनकी मशक्कत, उनकी मेहनत। जलनिधि है। किसी के पसीने की बूंदें निकलती होंगी, पहचान जायेगा। वह भी खारा है, ये बूंदें भी खारी हैं। मस्तक पर चमकते ये स्वेद बिंदु उसे समझ में आयेंगे क्योंकि उसे ही तो पार करने का परिणाम है यह। उसे लगता है कि यह रामदूत थोड़ा क्लांति निवारण कर ले। थोड़ा अवकाश, थोड़ा आराम ले ले। कैजुअल लीव। या वह भी न सही तो एक रिसैस, मध्यावकाश। इसलिये वह मैनाक पर्वत को हनुमान की विश्रांति-व्यवस्था को कहता है। प्रकृति के मन में भी हनुमान की कर्मठता और जुनून के प्रति एक आदर का भाव है। शायद इसीलिये कि हनुमान की गति समुद्र को अपनी गति और ऊर्जा की याद दिलाती हो। डेविड डे की एक कविता है:

The First horses were made of sea foam.

They rode their waves to the beaches
Then broke loose and dashed for the shore
Wild horses, raging with pride -
Look how much of the untamed sea
Is within them still.

समुद्र की उस 'जंगली घोड़े' वाली गति और ऊर्जा से भी तेज जा रहे पवनतनय के प्रति समुद्र में समानुभूति और सत्कार भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। लेकिन ध्यान दें कि तुलसी इस आधार पर समुद्र की हनुमान के प्रति संवेदनशीलता नहीं बता रहे हैं।

एक संस्कृत श्लोक है : "रत्नाकरै: किं कुरुते स्वरत्नैर्विन्ध्याचल: किं करिभि: करोति/श्रीखंडखण्डैर्मलयाचल: किं परोपकाराय सतां विभूतय:" समुद्र अपने रत्नों से, विंध्याचल अपने हाथियों से और मलयाचल चंदन के टुकड़ों से क्या करता है? सज्जनों की विभूतियाँ परोपकार के लिये होती हैं। यहाँ कथा-प्रसंग में समुद्र है और विंध्याचल/मलयाचल की जगह मैनाक पर्वत है। लेकिन बात वही है। प्रकृति की अंतर्हित सज्जनता की। प्रकृति के भीतर भरे परोपकार भाव की। ध्यान यह दीजिये कि समुद्र उपकार-भावना के तहत यह नहीं कह रहा, विचार कर कह रहा है। ध्यान दें कि ऋग्वेद में कहा गया है कि न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा: - कि देवता परिश्रमी के अतिरिक्त किसी की सहायता नहीं करते। (4/33/11)। यहाँ देवता न सही, जलनिधि सही। लेकिन परिश्रमी सहायता का स्वत्व अर्जित कर ही लेता है। लेकिन ध्यान दें कि समुद्र यह भी विचार नहीं कर रहा। उसके लिये तो यह काफी है कि ये हैं हनुमान। रघुपति के पठाए हुए। ईश्वरीय ग्लोरी के ही एक स्पार्क। उस कृपा सिन्धु की ही एक तरंग। यह सिन्धु उन कृपासिन्धु के दूत के प्रति सत्कार-भाव से भरना ही था।

यदि यहाँ पर हमें यह याद आता हो कि होमर की ग्रीक कविताओं में आंकीनोस जितना पानी है, उतना व्यक्ति, एफ्रोडाइट जितना पत्थर है, उतना व्यक्ति; तो अस्वाभाविक नहीं। यहाँ जलनिधि भी जितना जल है उतना व्यक्ति। मैनाक जितना पहाड़ है, उतना व्यक्ति। कविता जितना मैजिक होती है, उतना मेटाफर। इसलिये यदि 'चरन देने' से गिरिश्रृँग पाताल में चले जाते हों या समुद्र से कहने से मैनाक पर्वत ऊपर उठ आता हो और यह सब कुछ जादुई लगता हो तो घबराइये मत। कविता को यों ही जीवन फूँकने वाली विद्या नहीं कहा गया। यह एनीमाइजेशन (जीवनदाय) है। यह साहित्यिक इकॉलाजी है, एक ऐसे युग में और जरूरी जहाँ आदमी भी एक चीज हो गया है, जहाँ जीते जागतों को मशीन के एक पुर्जे में घटा दिया जा रहा हो; वहाँ तुलसी के इन रूपकों ने एक नई अर्थवत्ता प्राप्त कर ली है। रस्किन ने मानवीकरण को शायद इसीलिये विस्मयंकर आदर्शवाद (grotesque idealism) और संवेदनात्मक संभ्रांति (pathetic fallacy) कहा था। तुलसी के जरिये सुंदरकांड की यह पंक्तियाँ जब हम पढ़ते हैं तो लगता है कि हम एक ज्यादा से ज्यादा अमानवीय होते जा रहे समय में आशा का एक स्रोत मानवीकरण में ढूँढ़ रहे हैं।

क्यों और कैसे करें आरती

मीता जिंदल

पूजा के अंत में हम सभी भगवान की आरती करते हैं। आरती के दौरान कई सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है। इन सबका विशेष अर्थ होता है। ऐसी मान्यता है कि न केवल आरती करने, बल्कि इसमें शामिल होने पर भी बहुत पुण्य मिलता है। किसी भी देवता की आरती करते समय उन्हें 3 बार पुष्प अर्पित करें। इस दरम्यान ढोल, नगाडे, घडियाल आदि भी बजाना चाहिए।

एक शुभ पात्र में शुद्ध घी लें और उसमें विषम संख्या [जैसे 3, 5या 7]में बत्तियाँ जलाकर आरती करें। आप चाहें, तो कपूर से भी आरती कर सकते हैं। सामान्य तौर पर पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, जिसे पंच प्रदीप भी कहते हैं। आरती पाँच प्रकार से की जाती है। पहली दीपमाला से, दूसरी जल से भरे शंख से, तीसरा धुले हुए वस्त्र से, चौथी आम और पीपल आदि के पत्तों से और पाँचवीं साष्टांग अर्थात शरीर के पांचों भाग [मस्तिष्क, दोनों हाथ-पांव] से। पंच-प्राणों की प्रतीक आरती हमारे शरीर के पंच-प्राणों की प्रतीक है। आरती करते हुए भक्त का भाव ऐसा होना चाहिए, मानो वह पंच-प्राणों की सहायता से ईश्वर की आरती उतार रहा हो। घी की ज्योति जीव के आत्मा की ज्योति का प्रतीक मानी जाती है। यदि हम अंतर्मन से ईश्वर को पुकारते हैं, तो यह पंचारती कहलाती है।

सामग्री का महत्व : आरती के दौरान हम न केवल कलश का प्रयोग करते हैं, बल्कि उसमें कई प्रकार की सामग्रियाँ भी डालते जाते हैं। इन सभी के पीछे न केवल धार्मिक, बल्कि वैज्ञानिक आधार भी हैं।

कलश - कलश एक खास आकार का बना होता है। इसके अंदर का स्थान बिल्कुल खाली होता है। कहते हैं कि इस खाली स्थान में शिव बसते हैं।

यदि आप आरती के समय कलश का प्रयोग करते हैं, तो इसका अर्थ है कि आप शिव से एकाकार हो रहे हैं। किंवदंति है कि समुद्र मंथन के समय विष्णु भगवान ने अमृत कलश धारण किया था। इसलिए कलश में सभी देवताओं का वास माना जाता है।

जल से भरा कलश देवताओं का आसन माना जाता है। दरअसल, हम जल को शुद्ध तत्व मानते हैं, जिससे ईश्वर आकृष्ट होते हैं।

नारियल - आरती के समय हम कलश पर नारियल रखते हैं। नारियल की शिखाओं में सकारात्मक ऊर्जा का भंडार पाया जाता है। हम जब आरती गाते हैं, तो नारियल की शिखाओं में मौजूद ऊर्जा तरंगों के माध्यम से कलश के जल में पहुँचती है। यह तरंगें काफी सूक्ष्म होती हैं।

सोना - ऐसी मान्यता है कि सोना अपने आस-पास के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा फैलाता है। सोने को शुद्ध कहा जाता है।

यही वजह है कि इसे भक्तों को भगवान से जोडने का माध्यम भी माना जाता है।

ताँबे का पैसा - ताँबे में सात्विक लहरें उत्पन्न करने की क्षमता अधिक होती है। कलश में उठती हुई लहरें वातावरण में प्रवेश कर जाती हैं। कलश में पैसा डालना त्याग का प्रतीक भी माना जाता है। यदि आप कलश में ताँबे के पैसे डालते हैं, तो इसका मतलब है कि आपमें सात्विक गुणों का समावेश हो रहा है।

सप्तनदियों का जल - गंगा, गोदावरी, यमुना, सिंधु, सरस्वती, कावेरी और नर्मदा नदी का जल पूजा के कलश में डाला जाता है। सप्त नदियों के जल में सकारात्मक ऊर्जा को आकृष्ट करने और उसे

वातावरण में प्रवाहित करने की क्षमता होती है। क्योंकि ज्यादातर योगी-मुनि ने ईश्वर से एकाकार करने के लिए इन्हीं नदियों के किनारे तपस्या की थी।

सुपारी और पान - यदि हम जल में सुपारी डालते हैं, तो इससे उत्पन्न तरंगें हमारे रजोगुण को समाप्त कर देते हैं और हमारे भीतर देवता के अच्छे गुणों को ग्रहण करने की क्षमता बढ जाती है। पान की बेल को नागबेल भी कहते हैं।

नागबेल को भूलोक और ब्रह्मलोक को जोडने वाली कडी माना जाता है। इसमें भूमि तरंगों को आकृष्ट करने की क्षमता होती है। साथ ही, इसे सात्विक भी कहा गया है। देवता की मूर्ति से उत्पन्न सकारात्मक ऊर्जा पान के डंठल द्वारा ग्रहण की जाती है।

तुलसी - आयुर्वेद में तुलसी का प्रयोग सदियों से होता आ रहा है। अन्य वनस्पतियों की तुलना में तुलसी में वातावरण को शुद्ध करने की क्षमता अधिक होती है।

कर मेरा श्रृँगार तू

पुष्पा जोशी

हरी-भरी वसुन्धरा कह रही पुकार के, कर मेरा श्रृंगार तू रख मुझे निखार के।
वृक्ष मेरे वस्त्र हैं, क्यों काट नग्न कर रहा ? आज लाज माँ की बेच कैसे मग्न हो रहा।
केदार जैसी त्रासदी रख दे न फिर से मार के, कर मेरा श्रृंगार तू रख मुझे निखार के।
विश्व ताप बढ़ रहा, जीव भी सुलग रहा i वृक्ष, ज़मीं, पर्वतों को काटता क्यों चल रहा ?
आपदाएँ कारण हैं, तेरे ही प्रहार के, कर मेरा श्रृंगार तू रख मुझे निखार के।
लालच की पट्टियाँ क्यों आँखों में बाँध ली i बेच के ईमान तूने हर जगह की धाँधली।
व्यर्थ हैं प्रयास अभी प्राणों की गुहार के, कर मेरा श्रृंगार तू रख मुझे निखार के।
आज हो सतर्क तू, कर नहीं कुतर्क तू, छेड़ न प्रकृति को, बिगाड़ न आकृति को।
फिर नये प्रयास कर बागों में बहार के, कर मेरा श्रृंगार तू रख मुझे निखार के।
मैल कारखानों की, गन्ध इन दवाओं की, हवा विषैली कर रही है,जल विषैला कर रही।
बन गये हैं कारण, ये प्राणों पे वार के, कर मेरा श्रृंगार तू रख मुझे निखार के।
शुद्ध है नदी का जल, मिला नहीं तू जल में मल, वृक्ष यदि एक काट, सैकड़ों लगाता चल।
निधि अमूल्य पायेगा मैं कह रही पुकार के, कर मेरा श्रृंगार तू,रख मुझे निखार के।
दूँ रसीले फल तुझे, मैं शुद्ध तुझे वायु दूँ, दूँ पवित्र जल तुझे, मैं स्वस्थ लम्बी आयु दूँ ।
चल डगर संभाल के, दिन आयेंगे बहार के, कर मेरा श्रृंगार तू रख मुझे निखार के।

हिन्दी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में हिन्दी सिनेमा की भूमिका

डॉ. विनय कुमार शर्मा

भाषा व्यक्ति ही नहीं सामाजिक साझेदारी की भी संवाहिका होती है। हिन्दी भारत और हर भारतवासी की अस्मिता है और सांस्कृतिक परंपरा की विरासत की वाहिका है। राष्ट्रीय भाषा हिन्दी अब मात्र भारत की भाषा नहीं अपितु आज हिन्दी वैश्विक गाँव (Global Village) के निर्माण में फिल्मों का सहारा ले रही है। फिल्मों के प्रति मानव की रुचि कोई नयी नहीं है। चलचित्र या फिल्मों का संसार बडा अनोखा निराला होता है। तभी तो कबीर कहते हैं - लिखा लिखी की बात नहीं, देखा-देखी बात। साहित्य की तरह फिल्में समाज का आईना होती हैं वह व्यक्ति और समाज को उसका असली चेहरा दिखाने का प्रयास करती हैं। फिल्में सदैव सार्वभौमिक भाषा अर्थात् Universal Language बोलती हैं। कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो कभी न कभी फिल्मों की ओर आकर्षित न हुआ हो। फिल्मकार सत्यजित रे मानते हैं कि - एक फिल्म चित्र है, शब्द है, आन्दोलन है, नाटक-संगीत और कहानी है यह हजारों अभिव्यक्ति पूर्ण श्रव्य एवं दृश्य आख्यान है।

फिल्म निर्माताओं के लिए ऐसा शक्तिशाली माध्यम है जिससे सामाजिक परिवर्तन तो लाया ही जा सकता है साथ ही इससे भाषा की लोकप्रियता भी बढ़ती है। हिन्दी की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। फिल्में सामाजिक बुराईयों और अपराधों को सही ढंग से पहचानने में सहायक बनती हैं। फलतः उनसे दूर रहने की प्रेरणा मिलती है। डॉ. रोजर्स ने चलचित्र को विचारों के संप्रेषण का ऐसा माध्यम माना है जो किसी क्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए एक उत्तरोत्तर अनुक्रम में प्रेक्षित छायाचित्रों की एक लम्बी श्रृँखला है। विदेशों में हिन्दी की लोकप्रियता - हिन्दी फिल्मों से जुड़ी है। तभी तो जगदीश चन्द्र माथुर कहते हैं कि - पत्रकारिता से वाक्चित्रों में विश्व के कोने-कोने से जीवन की सांगोपांग छवियों, संगीत, ध्वनियों, और बोलियों को एक दूसरे के करीब रखा। इस तरह 'वन वर्ल्ड' (एक दुनिया) का नारा तीव्र हुआ। फिल्मों का संसार बड़ा अनोखा है। 7 जुलाई 1896 में ल्यूमियर ब्रदर्स ने बंबई में छः लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया। सन् 1857 में कोकोनट फेयर नामक फिल्म को भारत में फिल्माया गया। इसी श्रृंखला में हरिश्चन्द्र सखाराम भाटवडेकर ने सन् 1899 में 'दि रेस्टर्स', 'मैन एंड मंकी'' जैसी फिल्में बनाई। पूरी तरह भारतीय फीचर फिल्म बनाने वाले ढुँडीराज गोविन्द फालके (दादा साहब फालके) ने राजा हरिश्चन्द्र फिल्म बनाई जिसका प्रदर्शन 3 मई 1913 में हुआ था। इसके पहले 'पुंडलीक' फिल्म आ चुकी थी जो निर्माण की दृष्टि से आधी ब्रिटिश थी इसलिए दादा साहब फालके को ही भारतीय सिनेमा के जनक होने का गौरव प्राप्त है। फिल्मों के द्वारा किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक परंपरा का प्रकाशन होता है। फालके साहब इसी के प्रतीक थे।

सन् 1931 में पहली बम्बई के मेजिस्टिक सिनेमा में पहली ध्वनि फिल्म प्रदर्शित हुई जिसका निर्माण इंपीरियल फिल्म कंपनी ने किया था और निर्देशक आर्देशिर ईरानी थे। जैसे ही सवाक् फिल्मों का चलन आया वैसी ही मूक फिल्में बंद हो गईं और सन् 1931 में दक्षिण भारत में भक्त प्रहलाद तेलुगु में तथा तमिल में कालिदास जैसे सवाक् फिल्मों का निर्माण हुआ। फिल्में जनसंचार का सबल माध्यम

हैं। चौथे दशक में फिल्में जबरदस्त प्रभाव लेकर अवतरित हुईं। समाज और संस्कृति के अधःपतन को प्रस्तुत करने वाले वी.शांताराम ने दुनिया न माने, आदमी, पड़ोसी जैसी फिल्में दी और इन फिल्मों ने भारतीय जनमानस के उन्नयन का प्रयास किया। पी. सी. बरूआ की 'देवदास' और 'मुक्ति', देवकी बोस की 'विद्यापति' और 'सीता', नितिन बोस की 'बड़ी बहन', फ्रैंज ओस्टिन की 'अछूत कन्या', वी. दायले और फतेलाल की 'संत तुकाराम', महबूब की 'वतन', 'एक ही रास्ता' और 'औरत' जैसी फिल्मों ने जहाँ एक ओर लोगों का मनोरंजन किया वहीं दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का संदेश भी दिया। ये फिल्में सामाजिक अंतर्विरोधों पर आधारित थीं। इसलिए कहा जाता है कि फिल्में समाज का आइना होती हैं। पहली बार सन् 1937 में ईरानी जी ने रंगीन फिल्म 'किसना कन्या' बनाने का प्रयास किया किन्तु सन् 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो जाने के कारण रंगीन फिल्मों का निर्माण कई वर्षों तक बंद रहा। पाँचवे दशक में वी. शांताराम ने 'डॉ. कोटनीस की अमर कहानी', उदयशंकर ने 'कल्पना', एस.एस. वासन ने 'चद्रलेखा', चेतन आनन्द ने 'नीचा नगर', अब्बास ने 'धरती के लाल' जैसी कुछ विशेष प्रकार की फिल्मों का निर्माण किया। यदि हम फिल्मों का ऐतिहासिक ढाँचा देखें तो सन् 1949 में सोहराब मोदी ने 'पुकार' जैसी फिल्म बनाई। इसी समय विजय भट्ट ने 'भरत मिलाप', 'रामराज्य' जैसी पौराणिक फिल्मों का निर्माण किया।

जब भारत में पहली बार सन् 1952 में अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित हुआ तब पहली बार भारतीय सिनेमा जगत की पहचान और महत्ता विश्व में स्थापित हुई। सत्यजित रे ने सन् 1953 में पाथेर पांचाली बनाई जिसे देश विदेश में पुरस्कृत किया गया। यह फिल्म मानवीय संवेदनाएँ झकझोकरने में सफल हुई। पाँचवें-छठे दशक में फिल्म जगत् में कई ऐसे फिल्मकारा हुए जिन्हें अंगुलियों पर नहीं गिनाया जा सकता किन्तु इन फिल्मकारों की फिल्मों ने भारत ही नहीं विदेशों में भी धूम मचा दी और पहली बार हिन्दी गाने ऐसे लोग भी गुनगुनाने लगे जो हिन्दी भाषा नहीं जानते थे। विमल राय की 'मदर इंडिया' एक ऐसी फिल्म थी जिसने साहित्यकार प्रेमचंद द्वारा उनके साहित्य चित्रित गांव और वहाँ की समस्याओं का स्मरण करा दिया। यह पहली भारतीय हिन्दी फिल्म थी जिसे विश्व स्तर पर सराहा गया और आस्कर पुरस्कार हेतु मनोनीत किया गया। इसी समय राजकपूर की 'आवारा', 'बूटपालिश', 'जागते रहो', 'श्री 420' जैसी फिल्में आईं जिन्हें संगीत एवं फिल्मांकन के कारण विश्वस्तर पर सराहा गया। इन फिल्मों से हिन्दी विदेशों में खूब लोकप्रिय हुई। इसी का परिणाम था कि राजकपूर को सोवियत संघ ने सम्मानित करते हुए आमंत्रित किया। वहाँ उनके सम्मान में भीड़ का सैलाब उमड़ पड़ा और सबके होठों पर 'मेरा जूता है जापानी' गाने की पंक्तियाँ थीं। इसी समय वी. शांताराम की 'दो आँखे बारह हाथ', गुरूदत्त की 'प्यासा' जैसी फिल्मों ने जहाँ इंसानियत को बढ़ावा दिया वहीं दूसरी ओर भारत के दर्शकों पर ही नहीं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी दर्शकों पर जादू किया। 'सुजाता', 'बैजू बावरा', 'मुगले आजम', 'संगम', 'गाइड', 'आँखें' 'गंगा-जमुना' जैसी फिल्में समसामयिक और ऐतिहासिक विषयों को लेकर बनी।

आठवें दशक में 'हाथी मेरे साथी', 'उपकार', 'पूरब-पश्चिम', 'मेरा गाँव मेरा देश', 'रोटी कपड़ा और मकान', 'पाकीजा', 'अभिमान', 'शोले', 'दीवार' जैसी फिल्मों के द्वारा जहाँ हिन्दी फिल्म उद्योग

का विकास हुआ वहीं दूसरी ओर दुनिया में अपनी महत्ता स्थापित करते हुए हॉलीवुड के बाद बालीवुडके नाम से जाना जाने लगा। विश्व स्तर पर हिन्दी की लोकप्रियता का पता इसी से चलता है कि अमिताभ बच्चन और शाहरूख खान जैसे कलाकारों से विश्व का कोना-कोना परिचित है। इसी प्रकार धीर-धीरे अनेकानेक फिल्में बनाकर आज की स्थिति में भारत विश्व का सर्वाधिक फिल्म निर्माण करने वाला देश बन चुका हैं। आज फिल्में जन संचार माध्यम और हिन्दी के विकास का सशक्त आधार बन गई हैं। कई बड़े-बड़े देश अपना व्यापार भारत जैसे विशाल देश में स्थापित कर रहे है और अपनी कंपनियों में कर्मचारियों को हिन्दी सीखने का बढ़ावा दे रहें हैं। आज हिन्दी यू.के. में भाषा बोले जाने वालों की संख्या के आधार पर अपना द्वितीय स्थान बना चुकी है क्योंकि, सारे एशियन जिसमें श्रीलंका भी आता है सभी हिन्दी का संपर्क भाषा के रूप में उपयोग कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बालीवुड की फिल्में हॉलीवुड की फिल्मों से ज्यादा मशहूर हो रही हैं और करीब करीब दुनिया के आधे भाग में ये पहुंच चुकी हैं जैसे मिडिल ईस्ट, अफ्रीका, रूस और सुदूर पूर्वी देशों में। आज बग्लादेश, ब्राजील, जर्मनी, वोतस्वाना, नेपाल, फिलिपीन्स, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, साउथ अफ्रीका, यूगांड़ा यूनाइटेड किंगडम, यू.एस.ए., यमन आदि अनेक देशों के लोग हिन्दी बोल और समझ रहे हैं। जिसका कारण निश्चित ही हिन्दी फिल्में हैं।

हम सब जानते हैं कि मनुष्य ने भाषा को संप्रेषणीयता के लिए पैदा किया और उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए साहित्य का जामा पहनाया। साहित्य अनेक विधाओं में विकसित हुआ लेकिन सम्प्रेषणीयता की दृष्टि से इसका सबसे सशक्त माध्यम नाटक माना गया जो कि आज का सिनेमा है। सम्प्रेषणीयता के प्रसंग में 'अज्ञेय' जी से हुई एक चर्चा...

कलकत्ता विश्वविद्यालय में 'काव्य की सम्प्रेषणीयता' विषय पर अज्ञेय जी के व्याख्यान के बाद छात्रों ने उनसे पूछा - 'क्या कारण है कि रामचरित मानस सुदूर गाँवों तक में गाया जाता है। जबकि आप सरीखे महान लेखकों का लेखन बुद्धिजीवियों और छात्रों तक ही सीमित है?'

इसका जवाब 'अज्ञेय' जी ने यह दिया था - 'मानस एक लीला-काव्य है। उसमें सिनेमाई लोकरंजकता भी है। भविष्य में जब साहित्य और सिनेमा परस्पर मिल जाएँगे तब साहित्य आम आदमी तक पहुँच जायेगा।'

याद कीजिए 'रामायण', 'महाभारत', के सिनेमा ने अग्रेजी माध्यम से पढ़े लिखे बच्चों को हमारी विरासत सँभाल कर उन्हें 'रामा' को 'राम' और 'दशरथा' को 'दशरथ' कहना सिखा दिया। अब उपनिषदों पर भी हिन्दी बालचित्र बन रहे हैं और निर्माताओं का दावा है कि ये चित्र बच्चों के साथ - साथ अनपढ़ और निरक्षर जनता को भी लुभाएँगे।

एक विशेष तथ्य यह भी है कि गैर हिन्दी प्रदेशों और विदेश के अनेक देशों में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सिनेमा की अनूठी भूमिका रही है। कुछ ऐसे तथ्य जो प्रस्तुत हैं -

'मैनें प्यार किया', 'हम आपके हैं कौन', 'दिल वाले दुल्हनियाँ ले जाएँगे' आदि फिल्मों ने तो ऐसा तहलका मचाया कि दक्षिणी सिनेमा को हाल मिलने बन्द हो गए। यों भी दक्षिण भारत में अभिनेताओं के प्रति अद्‌भुत श्रद्धा-भाव है। अभिनेता-अभिनेत्रियों के तीन मंजिले 'कटआऊट' तो वहाँ साधारण सी बात है। इन घटनाओं से यह जाहिर है कि हिन्दी सिनेमा उन्हें हिन्दी प्रेम, या कम से कम 'विरोध कम' करने को तो बाध्य करता ही होगा।

दक्षिण ही नहीं सुदूर उत्तर पूर्वी इलाके 'मणिपुर', 'नागालैंड, 'अरूणाचल प्रदेश', 'मिजोरम' आदि में भी यदि आप किसी से हिन्दी में बात करना चाहें तो यह असंभव है। पर हिन्दी सिनेमा और गानों की बातों में उनकी सुबह कब शाम में तब्दील हो जाती है पता ही नहीं चलता।

आप किसी भी भाषा की कोई पत्रिका देखिए उसमें आधे से ज्यादा जगह सिनेमा घेरे हुए मिलेगा।'

अब प्रस्तुत हैं विदेश के कुछ अनुभव -

कैनेडा के 'वैन्कूवर' शहर के महाविद्यालय के छात्रों (पुराने प्रवासियों की नयी पीढ़ी) उन्मुक्त कंठ से स्वीकार करती है कि वे अपने माता-पिता के हिन्दी आग्रह को ठुकरा चुके थे। लेकिन हिन्दी सिनेमा ने उन्हें इतना लुभाया कि उन्होंने 'विशेष हिन्दी' पढ़ने की ठान ली।

'डरबन' (दक्षिणी अफ्रीका) और 'जोहान्सबर्ग' में हिन्दी संबोधनों के अलावा भारतीय मूल का कोई भी युवा हिन्दी नहीं समझता पर हिन्दी सिनेमा में उसकी परम आसक्ति का परिचय तब मिलता है, जब भारतीय कलाकारों के शो के टिकट 'बड़े ब्लैक' में बिकते देखे और लोगों का दूसरे शहरों में बड़ी संख्या में 'डबरन' आना। अस्सी हजार आदमियों की भीड़ से खचाखच भरा वहाँ का स्टेडियम 'भारत हमारी माँ है', 'भारत देश स्वर्ग से महान है' के नारों से गूँज रहा था और उसी के बीच डरबन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागध्यक्ष डॉ. सीताराम रामभजन कहते हैं कि यहाँ युवाओं में हिन्दी सीखने के प्रति खास ललक हिन्दी सिनेमा की वजह से ही है।

'मॉरीशस' में तो खैर हिन्दी और भोजपुरी बोली जाती है पर हिन्दी सिनेमा का जादू 'ट्रिनिदाद' तक में देखने को मिलता है। वहाँ के लोग नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत अपने बाशिंदे व्ही. एस. नॉयपाल को चाहे न जाने पर शाहरूख खान और ऐश्वर्या राय पर मुग्ध हैं। यदि ब्रायन लारा (विश्व का सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ी) और अमिताभ बच्चन एक साथ खड़ें हों तो भीड़ बच्चन जी की ओर ही जाएगी।

अफगानी लोग 'बच्चन, शाहरूख खाँ आदि पर मुग्ध हैं पर 'कन्धार' वे नहीं जानते। 'मैडम टू साड' (लन्दन) का प्रख्यात 'वैक्स म्यूजियम' विश्व के यशस्वी व्यक्तियों (सेलिब्रिटी) की कोटि में प्रतिदिन हमारे अभिनेता-अभिनेत्रियों की संख्या बढ़ा रहा है।

हिन्दी सिनेमा ने हमें हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के विकास का ऐतिहासिक दस्तावेज भी उपलब्ध कराया है। तीन दशक पहले एक 'विडम्बना' जैसे शब्दों का प्रयोग सिनेमा (अदालत) में होता था जबकि आज 'मुन्नाभाई' की मिलावटी हिन्दी का बोलबाला है। पाँच दशक पहले की 'अछूत कन्या' में माँ बेटी से कहती है - अशोक के ब्याह को महीना भर रहा है और मैं ज्वर के कारण ब्याह में काम में हाथ नहीं बँटा पा रहीं हूँ।....तुम उसकी माँ से मेरी तरफ से माफी माँग लेना।' उस उक्ति से हमें उस समय के पारस्परिक लगाव, सामाजिकता और कर्तव्यबोध वाली संस्कृति का परिचय मिलता है।

अंग्रेजी के इस आतंकवादी मारक शस्त्र का सामना करने की शक्ति यदि किसी में है तो वह है सिनेमा। क्योंकि लोकमानस ही भाषा की जड़ों को हरा करने वाला रसायन है। चूँकि बोलियाँ और लोकभाषाएँ जमीन से जुड़ी होती हैं, अपनी ताकत वहीं से ग्रहण करती हैं। आज इसे गंगा की तरह अपने में समेट सिनेमा इसे तरलता, सरलता, गतिमयता और ग्रहणशीलता दे रहा है।

ज्ञान को कर्म में क्रियान्वित करने के लिए एक वाहन की आवश्यकता होती है। दिलचस्प है, यह जानना कि भाषा ज्ञान है और उसका सर्वश्रेष्ठ वाहन है 'सिनेमा'।

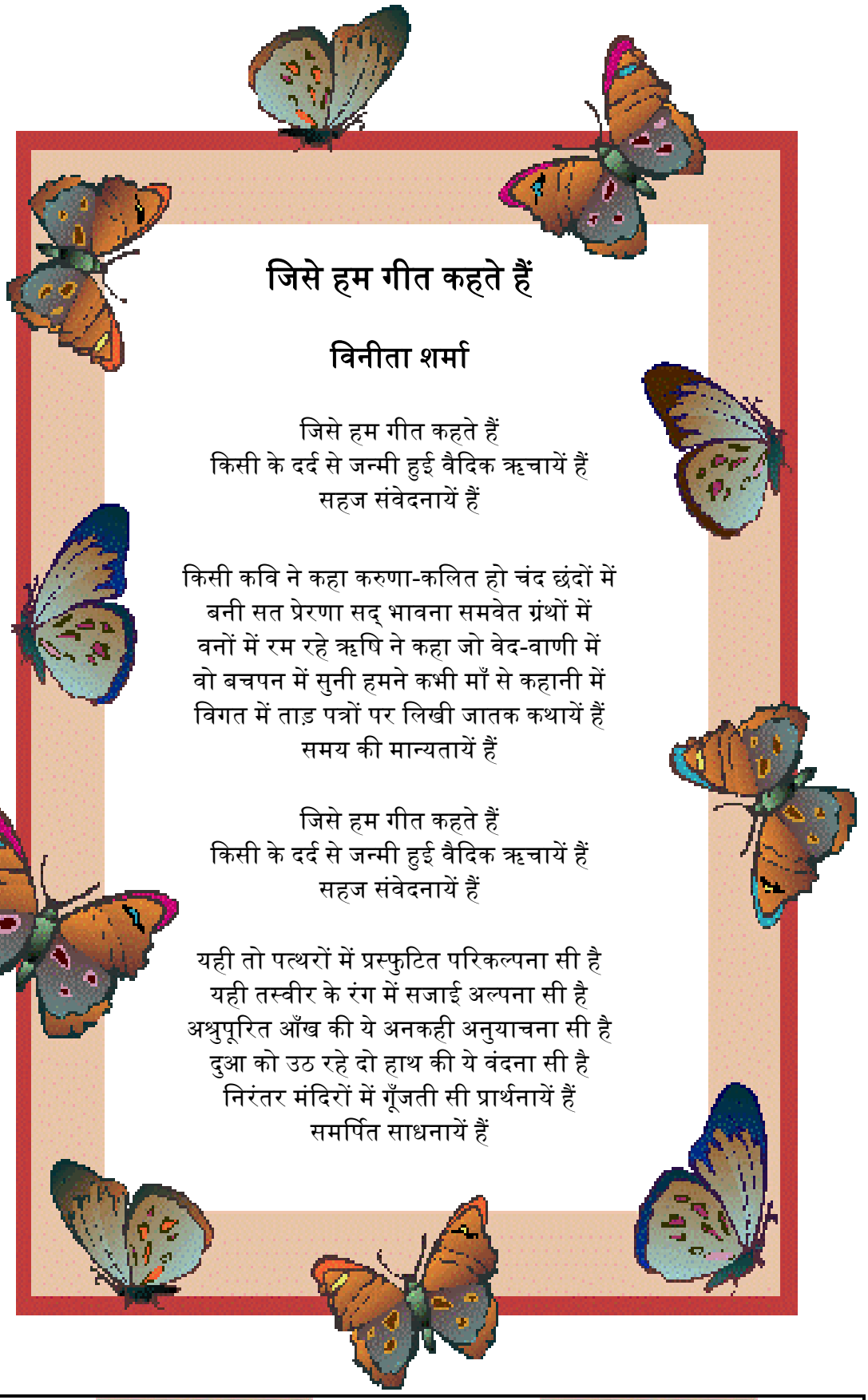

जिसे हम गीत कहते हैं

विनीता शर्मा

जिसे हम गीत कहते हैं
किसी के दर्द से जन्मी हुई वैदिक ऋचायें हैं
सहज संवेदनायें हैं

किसी कवि ने कहा करुणा-कलित हो चंद छंदों में
बनी सत प्रेरणा सद् भावना समवेत ग्रंथों में
वनों में रम रहे ऋषि ने कहा जो वेद-वाणी में
वो बचपन में सुनी हमने कभी माँ से कहानी में
विगत में ताड़ पत्रों पर लिखी जातक कथायें हैं
समय की मान्यतायें हैं

जिसे हम गीत कहते हैं
किसी के दर्द से जन्मी हुई वैदिक ऋचायें हैं
सहज संवेदनायें हैं

यही तो पत्थरों में प्रस्फुटित परिकल्पना सी है
यही तस्वीर के रंग में सजाई अल्पना सी है
अश्रुपूरित आँख की ये अनकही अनुयाचना सी है
दुआ को उठ रहे दो हाथ की ये वंदना सी है
निरंतर मंदिरों में गूँजती सी प्रार्थनायें हैं
समर्पित साधनायें हैं

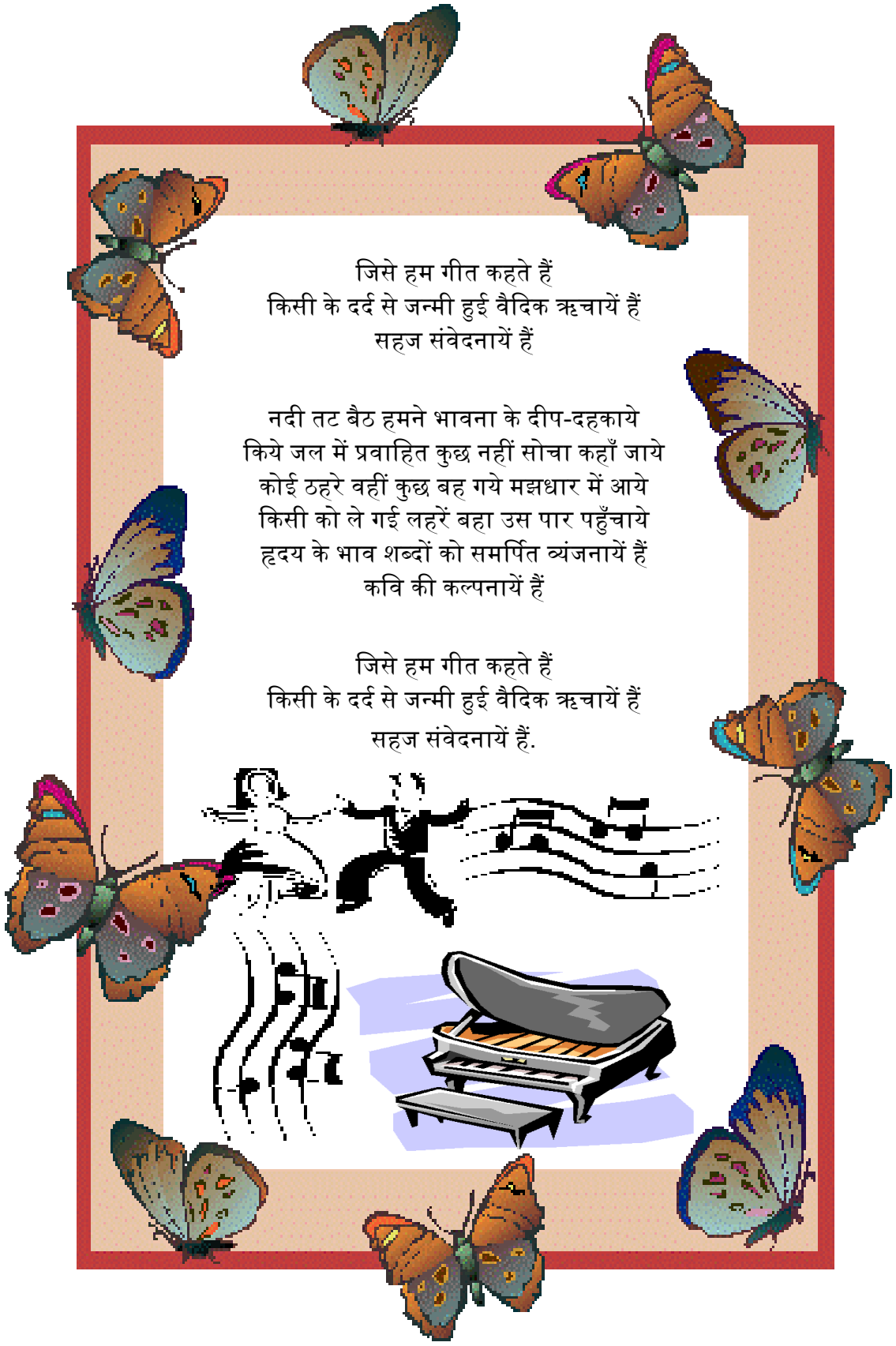

जिसे हम गीत कहते हैं
किसी के दर्द से जन्मी हुई वैदिक ऋचायें हैं
सहज संवेदनायें हैं

नदी तट बैठ हमने भावना के दीप-दहकाये
किये जल में प्रवाहित कुछ नहीं सोचा कहाँ जाये
कोई ठहरे वहीं कुछ बह गये मझधार में आये
किसी को ले गई लहरें बहा उस पार पहुँचाये
हृदय के भाव शब्दों को समर्पित व्यंजनायें हैं
कवि की कल्पनायें हैं

जिसे हम गीत कहते हैं
किसी के दर्द से जन्मी हुई वैदिक ऋचायें हैं
सहज संवेदनायें हैं.

और सतसंग चलता रहा....

डॉ. नरेंद्र शुक्ल

संत सतगुरु इस धरती पर भगवान हैं। वे ज्ञान व भक्ति का एक ऐसा प्रयाग हैं जिसमें कोई भक्त बिना किसी भेद-भाव के डुबकी मार सकता है।

'भक्तो, संत कबीर ने कहा है - जाति-पाति पूछे नही कोई, हरि को भजि तो हरि का होई। यहाँ कोई राजा रंक नहीं। कोई निर्बल नहीं। कोई अनाथ नहीं है। सब के साथ सर्वशक्तिमान प्रभू स्वयं खड़े हैं। प्रभू के हाथ बहुत विशाल हैं। उनके आशीर्वाद की छत्रछाया सभी भक्तों पर समान रूप से हैं। प्रभू-दरबार सबके लिये खुला है। सुबह-शाम, जब भी किसी दुखिया को प्रभू की याद आये, वह यहाँ आ सकता है। कोई पाबंदी नहीं। प्रभू अपने सौ भक्तों में से भी पीड़ित को पहचान लेते हैं। उसके दर्द को अनुभव कर लेते हैं। प्रभू संवेदनशील हैं। वे एक क्षण के लिये भी अपने भक्त की पीड़ा बरदाश्त नहीं कर सकते। प्रभू का स्वरुप प्रकति के कण- कण में हैं...पहुप बास ते पातरा ऐसा तत अनूप अर्थात् प्रभू फूल में खुशबू की तरह बसे हैं। यहाँ सभी भक्तों के साथ बैठे हैं उनके दिलों में विराजमान हैं। मेरा आशीर्वाद यहाँ आये सभी भक्तों के साथ है। सबके कष्ट दूर होंगे, बस आप सब इसी तरह से बाबा पर अपनी आस्था, विश्वास व समर्पण की भावना बनाये रखना। परमात्मा को प्राप्त करके इस जन्म और मरण के चक्र से मुक्ति पाने का यही रहस्य है। मानव में अपने इष्ट को प्राप्त करने के लिये प्रेम-रस का उदगम होना अत्यंत आवश्यक है। प्रेम आत्मा-परमात्मा के मिलन-पथ की पहली सीढ़ी है। सभी भक्तों का कल्याण होगा। इस संसार में प्रभू कई रूपों में अवतरित हुये हैं। उनके सभी रूपों में से कृष्ण रूप सबसे उत्तम है। यह आत्मा व परमात्मा में प्रेम की भावना उत्पन्न करता है। प्रेम में आकर्षण है, आलिंगन है। रस है। अमृत है। अगर आप प्रभू को हासिल करना चाहते हैं तो आप सब भक्तों को लोक-लाज, मोह-माया तजकर मुझसे प्रेम करना होगा। मैं भगवान हूँ। इस प्रेम-मार्ग में शारीरिक पवित्रता की अपेक्षा मन की पवित्रता, आस्था व विश्वास आवश्यक है।'

'परदेसिया, तू है मेरा पिया, तुझ बिन तड़पे जिया, ओ परदेसिया, तू है मेरा पिया।
घूंघट की आड़ में, दिलवर का दीदार अधूरा रहता है
जब तक न पड़े साजन की नज़र, श्रृँगार अधूरा रहता है। घूंघट की आड़ में , दिलवर...।'

पीड़ाहरि बाबा परमात्मा की भक्ति में लीन होकर अपनी खास चेलियों के साथ मंच पर डांडिया खेलने लगते हैं। सामने पंक्तिबद्ध बैठे सभी भक्त हाथ जोड़कर कर श्रद्धा भाव से गाने लगते हैं - 'परदेसिया, तू है मेरा पिया, तुझ बिन तड़पे जिया, ओ परदेसिया. . . तू है मेरा पिया।'

मंच के ठीक सामने लगी पंक्तियों में सबसे पिछली पंक्ति में बैठी ताई बड़े ध्यान से बाबा जी के प्रवचन सुन रही थी । भक्तों के गाने व जयघोष की तेज़ आवाज़ में प्रवचन ठीक से सुनाई नहीं दे रहा था। उसने साथ आई धोबिन फुलिया से पूछा - 'री फुलिया, क्या हम बाबा के सामने सबसे अगली लाइन में नहीं बैठ सकते ?'

'काहे नाहीं बैठ सकते ताई, पर सुना है कि प्रभू के सामने सबसे अगली लाइन में वही भक्त बैठ सकता है जो कठोर तपस्या व त्याग करने का बूता रखता हो।'

तपस्या तो ठीक है, पर त्याग...त्याग किस चीज़ का ! प्रभू तो स्वयं मालामाल हैं। उन्हें किस चीज़ की आवश्यकता ? ताई ने हैरानी से पूछा।'

'मेरा मतलब यह है कि जो सांसारिक मोह-माया का बंघन त्याग के प्रभू के चरणों में अपना तन-मन-धन सब कुछ समर्पित करने का प्रण लेता है वही प्रभू के चरणों में स्थान पाने का अधिकारी हो सकता है। वैसे मुझे ज्यादा तो नहीं मालूम पर, मेरी सखी, साघ्वी मयूरी कह रही थी कि प्रभू के सामने अगली लाइन में समाज व परिवार से तिरष्कृत व पीड़ित भक्तों को ही बैठाया जाता है ताकि प्रभू का आशीर्वाद रूपी फल सीधे उनकी झोली में गिरे और उनकी पीड़ा दूर हो।'

ताई को अपनी पीड़ा का आभास होने लगा। नंदिनी के बापू व उसके पति सुधाकर पांडे के स्वर्गवासी होते ही उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। जिन बेटों को पाने के लिये उसने उपवास किये। देवी-देवताओं की अराधना की। दूर पहाड़ों पर बने मंदिरों में जाकर मनौतियाँ मांगी। जिनको दूध पिलाकर बह हाड़-मास हो गई, आज वे ही उसकी एकमात्र पूंजी यह घर हथियाना चाहते हैं। अपनी सगी माँ व मानसिक-रुप से अपंग अपनी असहाय बहन नंदिनी को बेघर करने पर तुले हुये हैं। दाने-दाने को मोहताज़ कर दिया है। बहुयें भी उस बेचारी पर अत्याचार करने से बाज़ नहीं आतीं। बड़े की बहू रीटा तो बड़ी निर्दयी है। अभी कल ही की तो बात है सुबह जल्दी उठकर बिटटू को तैयार न कर पाने व स्कूल की बस छूट जाने पर रीटा ने नंदिनी को इतना मारा कि वह बेहोश हो गई। वो तो भला हो प्रोफेसर साहब का जिन्होंने घर का गेट फांदकर उसे बचाया नही तो वह उसे मार ही डालती पर, गलती उसकी अपनी ही है जो मंदिर जाते हुये उसने नंदिनी को नहीं जगाया। मैं भी क्या करूँ माँ हूँ न। बेचारी सारा-सारा दिन घर का काम करती रहती है। खाने को भी ढ़ग से नहीं मिलता। इस पर वह दो घड़ी सो भी न पाये। मुझसे उसका दुःख नहीं देखा जाता। बेचारी चीथड़ों में लिपटी रहती है। छोटे की विमला रानी भी कम नहीं है। उसकी नज़र नंदिनी के गहनों पर है। कल कह रही थी मम्मी तुम नंदिनी की चिंता बिल्कुल न करो। यह मेरी छोटी बहन की तरह है वो तो कल मैं अपने मायके गई हुई थी वरना क्या मज़ाल कोई उसकी तरफ आंख उठा कर देख भी ले। जीना हराम न कर दूँ तो पहलवान तिवारी की बेटी नहीं। यही विमला मुझसे दो महीने तक नही बोली थी जब करवाचैथ पर मैंने उसे नंदिनी के गहने देने से मना कर दिया था। खोखला प्यार है, केवल दिखावा है, सब जानती हूँ। सब के सब धन के लोभी हैं, मक्कार है। सूअर का बाल है इनकी आंखों में। वो तो जाते हुये यह घर मेरे नाम कर गये वरना ये हमें कब का दूध में मक्खी की तरह इस घर से निकाल बाहर कर चुके होते। खैर कोई बात नहीं परमात्मा के घर देर है अंघेर नहीं बस, प्रभू मेरी कोमल मासूम बच्ची को ठीक कर दें। उसका हकलाना और नींद में चलना बंद हो जाये तो मैं अपनी नंदिनी की शादी करके सदा के लिये यहीं प्रभू के आश्रम में ही आ जाऊँगी। उसने अपने आंसू पोंछ लिये। नुक्कड़ वाली पनवाड़िन रेखा कह रही थी कि ताई पीड़ाहरि बाबा के पास हर मर्ज की दवा है। उनके पास अनेक सिद्धियाँ हैं। बाबा जी मनुष्य तो क्या पशुओं तक के शारीरिक दोषों को दूर कर देते हैं। पड़ोस की मिसराइन के बच्चा नहीं हो रहा था। ब्याह को सात साल हो गये थे। उसने कोई दवा-दारु नहीं छोड़ी। डॉक्टर, पंडित, मौलवी सभी

को दिखाया लेकिन कोख जस की तस बंजर ही रही । बेचारी बड़ी परेशान थी। दो-दो बार आत्महत्या की कोशिश कर चुकी थी । घर के बड़े-बूढ़े सभी ताने देते थे । मुझसे उसका दुःख देखा नहीं गया । मैं उसे बाबा के पास ले आई और बाबा के आशीर्वाद से पिछले महीने से वह पेट से है । और तो और वो तुम्हारे पड़ोसी ननकउ का बेटा बिलेसर देखा था बाप को कैसे पीटता था दोनों मे एक क्षण के लिये भी नहीं बनती थी । बाबा की शरण में आते ही दोनों में इतना प्यार पैदा हो गया अब हर हफते विलेसर खुद अपने लँगड़े बाप को पीठ पर लाद कर सतसंग छोड़ जाता है । धन्य हो महाराज, ताई ने हाथ जोड़ लिये ।

'ताई चलो, सतसंग खतम हो गया । फूलिया ने ताई का हाथ पकड़कर उठाते हुये कहा ।'

'हूँ, क्या सतसंग खतम हो गया, पर मुझे तो बाबा से मिलना है ! नंदिनी के बारे में बात करनी है ! ताई ने जैसे नींद से जागते हुये हड़बड़ी में कहा ।'

'ताई अब कल आयेंगे । मेरी साध्वी मयूरी से जान-पहचान है । तू घबरा न, मैं उससे मिलकर प्रभू से मिलने की कोई तरकीब निकालती हूँ, लेकिन इसके लिये कुछ भेंट का इंतज़ाम करना होगा ।'

'कैसी भेंट फुलिया? प्रभू तो स्वयं त्यागी हैं । मोह-माया के बंधन से परे हैं । ताई ने प्रभू के निष्छल स्वरुप का बखान करते हुये कहा ।'

'वो तो ठीक है ताई लेकिन, साध्वी मयूरी का कहना है कि प्रभू चरणों में खाली हाथ जाने से बरक्कत नहीं होती । मनोरथ सफल नहीं होता । मानव को अपना सब कुछ अपने अराध्य की सेवा में न्योछावर कर देना चाहिये और फिर वह कुछ उपहार लिये बिना मेरा काम थोड़े ही करेगी । गांव में उसे अपने छोटे भाई को पढ़ाने के लिये हर महीने कुछ न कुछ भेजना पड़ता है । ताई तू केवल दो हजार का प्रबंध कर ले बाकी मैं देख लूँगी । फुलिया ने सीधे-सीधे एक साथ सब कुछ कह दिया ।'

'ठीक है कोई बात नहीं, अपनी बेटी नंदिनी के लिये मैं कुछ भी कर सकती हूँ पर कल प्रभू-दर्शन तो हो जायेंगे न ! ताई बात पक्की कर लेना चाहती थी ।'

'हाँ, हाँ, क्यों नहीं, मैं आज ही मयूरी से बात करुंगी पर तू कल सुबह सतसंग शुरु होने से कम से कम दो घंटे पहले ठीक आठ बजे पनवाड़िन की दुकान के पास मिलना । दोनों एक साथ आश्रम चलेंगे।' उस दिन पूरी रात ताई को नींद न आई । रह-रह करवटें बदलती रही । आज साक्षात प्रभू की झलक पाकर उसे विश्वास हो गया था कि वे उसकी फूल सी कोमल बेटी को अवश्य अच्छा कर देंगे । प्रभू की कृपा व मंत्र-जाप से वह हकलाना व नींद में चलना छोड़ देगी और फिर सुंदर-सा राजकुमार देखकर वह अपनी नंदिनी की शादी कर देगी । ताई ने साथ लेटी हुई नंदिनी का माथा चूम लिया । नंदिनी ने प्यार से अपनी मां के गले में बाहें डाल दीं ।

सुबह ताई मुह अंधेरे ही उठ गई । घड़ी में देखा पांच बजकर बीस मिनट हुये थे । ताई ने जल्दी-जल्दी घर का सारा काम-काज निपटाया और साढ़े छः बजे तक वह नहा-धो कर तैयार हो गई । आज उसकी बूढ़ी हडडियों में न जाने कहाँ से इतनी शक्ति आ गई थी कि वह आज बड़े से बड़ा पहाड़ भी धकेल सकती थी । उसने अपना लाल रंग का छोटा सा पर्स उठाया खोल कर देखा । पेंशन के पूरे पांच हजार रुपये पड़े थे । ताई ने एक-एक हजार के दो नोट अपनी साड़ी के पल्लू में बाँधे और घर से निकल आई । गांव की छोटी-छोटी गलियों से होते हुये वह पनवाड़िन रेखा की दुकान के पास पहुंची । उजाला

होने लगा था। वहीं बरगद के पेड़ के पास खड़े होकर वह फुलिया का इंतजार करने लगी। सड़क के दोनों ओर जंगल-पानी के लिये जाने वाले लोगों का आना-जाना शुरु हो गया था। लगभग बीस मिनट इंतज़ार करने के बाद फुलिया हाँफते हुये वहाँ पहुंची। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। ताई ने पूछा - 'फुलिया, आधा घंटा हो गया यहां खड़े-खड़े। तू कहां रह गई थी ?'

फुलिया ने हाँफते हुये कहा, 'ताई आज तो गज़ब हो गया था। पिंकी के पापा जाग गये थे तुम्हें तो मालूम ही है कि वे साधू-संतों से कितनी नफरत करते हैं। उन्हें पीड़हरि बाबा के चमत्कारों पर जरा भी विश्वास नहीं है। परसों कह रहे थे लम्पट है साला। हमेशा औरतों के पीछे रहता है, मक्कार है, तांत्रिक क्रियाओं व झाड़-फूंक से मासूम गाँव वालों में अंधविश्वास फैलाता है, डरा-धमकाकर भोले-भाले लोगों की जमीनें हड़पता है। अपहरण करता है। अपने फायदे के लिये हत्याएँ तक करने में भी उसे गुरेज नहीं। गांजा अफीम और वो क्या कहतें हैं मर्दाना शक्ति बढ़ाने के नाम पर नकली दवाओं का व्यापार करता है। सुना है आश्रम के पैसों को सूद पर चढ़ाया हुआ है। यह आश्रम नहीं चोरी, डकैती, अपहरण, लूट और बाबा की अय्याशी का अडडा है। ख़बरदार, जो वहाँ गई। फुलिया तू देख लेना एक दिन यह पाखंडी बाबा कानून की गिरफ़्त में ऐसा फँसेगा कि इसका अगला-पिछला सब निकल जायेगा। आज जो पालीटिशियन वोटों के लालच में इसके साथ खड़े हैं कल सब इससे कन्नी काट लेंगे। भगवान के घर देर है अंधेर नहीं। पाप का घड़ा एक न एक दिन अवश्य फूटता है।'

ताई डर गई। उसकी आँखों में बाबा का ख़ौफ साफ दिखाई देने लगा। फुलिया ने शिकार हाथ से फिसलता हुआ देखकर बात पलटते हुये कहा, 'ओह हो ताई ! तुम बेकार में डर रही हो। कहीं ऐसा थोड़े ही होता है। तुम घबराओ नही ये तो इनके दोस्त विक्रम की लगाई हुई आग है जिसे दो महीने पहले आश्रम में चोरी के आरोप में पुलिस ने पकड़ा था। पीड़ाहरि बाबा तो साक्षात भगवान हैं। देखा नहीं था कितना तेज़ था माथे पर। चेहरे पर अपार शांति व सुकून लिये सतसंग में जब वे प्रवचन देते हैं तो ऐसा लगता है जैसे फूल झर रहे हों। प्रभू पीड़ित को देखते ही जान जाते हैं कि उसे क्या पीड़ा है। धन्य हो महाराज।' श्रद्धा स्वरूप फुलिया ने दोनों हाथ जोड़ते हुये कहा।

बाबा के प्रति फुलिया की श्रद्धा भावना देखकर ताई के चेहरे पर एक बार फिर से उम्मीद की रेखा उभर आई, 'फुलिया, तू बातें ही करती रहेगी या चलेगी भी। आठ बजने को हैं। अभी तुझे मयूरी से भी मिलना है।'

फुलिया ने ताई का हाथ पकड़ते हुये कहा, 'ताई, तू इसकी चिंता छोड़ दे। मेरी मयूरी से कल ही बात हो गई है। आज तू प्रभू से अवश्य मिल पायेगी पर तू पैसे तो लाई है न? मयूरी उधार बिल्कुल नही करती।'

'हाँ-हाँ, क्यों नहीं। यह ले दो हज़ार रुपये, ठीक से गिन ले, पूरे दो हज़ार हैं। ताई ने साड़ी के पल्लू में बंधे रुपये खोल कर देते हुये कहा।'

'क्यों शर्मिंदा कर रही हो ताई, मैं क्या तुम्हें नहीं जानती। सारी दुनिया फ़रेब कर सकती है पर तुम कभी नहीं। फुलिया ने रुपये ब्लाउज़ के अंदर रखते हुये ताई पर अपना विश्वास जताया।' इस तरह इधर-उधर की बातें करते हुये दोनों आश्रम पहुंच गये। आश्रम के बाहर शांति थी। चारों ओर

अगरबत्ती व धूप की खुशबू आ रही थी। टैंट में बाबा का विशाल मंच और उस पर रखे हुये झूले के ठीक सामने दरियाँ बिछ रही थीं। सामने लगे पर्दों पर बाबा की फोटो बनाई गई थी। सतसंग आरम्भ होने में अभी काफी समय था। लिहाज़ा, इक्का-दुक्का भक्त ही नज़र आ रहे थे। ताई इस भव्य सतसंग स्थल की सजावट देखकर चकाचैंध थी। कल सतसंग में वह लगभग दो लाख श्रद्धालुओं के पीछे बैठी थी इसलिये संतसंग स्थल की भव्यता को न देख पाई थी।

'ताई, तू यहाँ दरी पर बैठ मैं बाबा से तेरी मीटिंग फिक्स करा के आती हूँ।' फुलिया ने प्रोफेशनल अंदाज में कहा।

'ठीक है फुलिया पर तू जल्दी आना। सतसंग शुरु होने में बस अब आधा घंटा ही रह गया है। ताई ने वहीं दरी पर बैठते हुये कहा।'

'तू चिंता न कर ताई। तू अब प्रभू के दर पर है आज तेरी पीड़ा का अंत अवश्य होगा।' फुलिया आश्रम से लगभग दो सौ गज़ पर दायीं ओर बनी अनेक कुटियाओं में से एक कुटिया के दरवाज़े पर जाकर ठिठक गई। कुटिया के भीतर से पीड़हरि बाबा की कड़क आवाज़ आ रही थी, 'चोर! साले सब के सब चोर। इन्हें मोटी पगार चाहिये। आश्रम की गाड़ियों से तेल चुरा कर बेचते हैं। भक्त लाने के एवज़ में मोटा कमीशन चाहिये। देते हैं तुम्हें कमीशन....चटटाक़....चटटाक....थप्पड़ों की आवाज़ आने लगती है। कमीशन मांगेगा तू सूअर, कमीशन चाहिये, ये ले....चटटाक....ये ले...धड़ाक घूँसों की आवाज़ आने लगी। शमशेर बहादूर, दीदार सिंह, जाओ दुःखभंजन कुटिया में ले जाकर इनका इलाज करो। ज्यादा चर्बी चढ़ गई है। साले फ्री का माल उड़ा-उड़ा कर भैंसे होते जा रहे हैं।' फुलिया ने देखा दो दैत्य सरीखे गुंडे ड्राइवर रामशब्द और आश्रम में काम करने वाले रसोइये बंसी को कॉलर से पकड़कर घसीटते हुये दरवाजे से निकले। फुलिया यह सब देख-सुन कर एकबारगी काँप गई। वह अब तक आश्रम के लिये चार भक्त ला चुकी थी लेकिन कमीशन उसे केवल एक का ही मिला था। वह सोचने लगी हाय अब वह बाबा से अपना कमीशन कैसे माँगेगी। बाबा गुस्से में हैं। भक्त फुसला कर लाने के लिये कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं पर कुछ भी हो आज वह अपना कमीशन ले कर रहेगी। हिम्मत करके वह कुटिया के भीतर दाखिल हो गई। बाबा अपने सेवकों से घिरे थे। वह एक ओर कोने में साध्वी मयूरी के पास हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। बाबा ने अपने सेवकों को समझाते हुये कहा, 'इस आश्रम को ऐसे जूनूनी अनुयायियों की आवश्यकता है जिनमें आग हो। चीते जैसी फूर्ति हो और हाथियों जैसा बल हो। ऐसे चोरों और मरियल गधों की यहाँ तनिक भी आवश्यकता नहीं है। चल मीनू मेरी मालिश कर दे सतसंग का टाइम हो रहा है। पीड़ाहरि बाबा ने साध्वी मीनू की ओर इशारा करते हुये कहा।' 'अरे राधे, तूने हमारे नहाने वाले पोंड में फ्रेश गुलाब जल भरा कि नहीं? बाबा ने सेवक राधे को अवाज़ लगाई।

'अभी भर कर ही आ रहा हूँ प्रभू। आपकी आज्ञानुसार केसर युक्त साबुन भी रख दिया है। राघे ने कुटिया में प्रवेश करते हुये कहा।'

'ठीक है।' बाबा साध्वी गुंजन के सहारे उठ खड़े हुये।

'प्रभू की जय हो मैं आपकी दासी मयूरी और इसे तो आप जानते ही हैं, एस. ए 1474 देवीगंज वाली फुलिया।' बाबा ने पीछे घूमकर देखा, काला रंग, मोटा शरीर, अनघड़ नयन-नक्श वाली

फुलिया। बाबा ने मुँह फेर कर झल्लाते हुये कहा, 'इसे क्या हुआ है ? हर महीने अपना कमीशन तो ले जाती है और क्या चाहिये इसे ?'

'प्रभू यह एक मालदार भक्त लाई है। उसके पास देवीगंज में आलीशान कोठी है।'

'हूँ। क्या कष्ट है उसे? बाबा को भक्त में दिलचस्पी पैदा हुई।'

'प्रभू! उसे कोई कष्ट नहीं है। वह तो अपनी पंद्रह साल की बेटी जिसे नींद में चलने की बीमारी है, के इलाज़ के लिये यहाँ आई है।'

'हूँ....ठीक है। उसका इलाज़ अवश्य किया जायेगा। सतसंग में तुम उसे सबसे अगली पंक्ति में बैठा देना, देख लेंगे। पीड़ाहरि बाबा कुटिया से बाहर निकल गये।

फुलिया ने मुस्कराते हुये एक हज़ार का एक नोट साध्वी मयूरी को दिया और लगभग भागती हुई वापिस ताई के पास पहुंची, 'ताई सब फिक्स हो गया। अब तू यहीं प्रभू के मंच के पास सबसे अगली पंक्ति में बैठ, प्रभू तेरा कल्याण करेंगे। मैं चलती हूँ, ये उठ गये होंगे और तुझे तो इनका पता ही है। आसमान सिर पर उठा लेंगे।' फुलिया ने चलते हुये कहा। बाबा के एकबारगी हाँ ने बकाया कमीशन न मिलने का दुःख कुछ कम कर दिया था।

सतसंग ठीक दस बजे आरंभ हुआ। इस दौरान बाबा ने प्रसाद के रुप में गेंदे का एक फूल ताई की झोली में फेंका। ताई धन्य हो गई। वहीं माथा निवाकर, ताई ने प्रभू के आशीर्वाद को क़बूल किया। बाबा ने अगली पंक्ति में बैठे कुछ अन्य पीड़ितों की झोली में भी प्रसाद स्वरुप गेंदे के फूल गिराये। सतसंग समाप्त होते ही प्रसाद धारण किये हुये सभी भक्त, प्रभू सेवकों की टोली के साथ आश्रम के दायीं ओर पीपल के पेड़ से सटी कुटिया की ओर चल पड़े। भक्तों के अनुसार यहाँ पीपल के पत्तों से ढ़की इस कुटिया में प्रसादधारी पीड़ित भक्त, प्रभू से सीधे संवाद कर सकते हैं। यहाँ सभी की पीड़ा दूर की जाती है। अन्य भक्तों की तरह ताई भी कुटिया के सामने बिछी दरी पर बैठ गई। कुटिया के दरवाजे से केसर युक्त अगरबत्ती की खुशबू आ रही थी। कुटिया के दरवाजे के आगे सफेद रंग का एक झीना परदा लटक रहा था। बाबा को कोई छू नहीं सकता था। साध्वी गौरी ने वहाँ बैठे सभी भक्तों को बताया कि यह संवाद कुटिया है। यहाँ कोई परदा नहीं है। यहाँ सब कुछ खुला है। यहाँ इशारों की कोमल भाषा का प्रयोग किया जाता है। इसलिये भक्त अपने मन की सभी शंकायें एक ओर रखकर एकाग्रचित्त हो प्रेमपूर्वक प्रभू की भक्ति में आस्था व विश्वास बनाये रखें। प्रभू साक्षात् आपके समक्ष विराजमान हैं। भक्तजन निःसंकोच भाव से अपनी व्यथा प्रभू के समक्ष रख सकते है। प्रभू के आशीर्वाद से सबकी पीड़ा दूर होगी। उजले सफेद रंग का चोगा, गले में रुद्राक्ष, सिर पर सफेद रंग की पगड़ी तथा पगड़ी के एक कोने पर मोर पंख लगाये पीड़ाहरि बाबा ने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और सामने बैठी 24-25 वर्ष की एक गौरवर्ण युवती की ओर इशारा कर के उसे अपने पास बुलाया। बाबा ने उसकी आँखों में देखते हुये कहा - 'तेरे परिवार में संकट है। तेरा पति तेरे वश में नहीं है। वह शराब पीकर तुझे पीटता है। सब तेरे पिछले कर्मों का फल है। शुक्रवार शाम सूरज ढ़लने पर मेरी 'उद्धार कुटिया' में आ जाना। तेरा कल्याण होगा। युवती बाबा के समक्ष हाथ जोड़, सिर निवा के चली जाती है। 'तेरा बेटा कार एक्सीडेंट में घायल हो अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच झूल रहा है। घबरा मत माई। पूजा-अर्चना पर विश्वास रख। सब ठीक हो जायेगा। प्रभू बच्चे को अवश्य बचायेंगे। बुधवार को सुबह पाँच

बजे 10 ग्राम के पाँच सिक्कों व हवन सामग्री के साथ 'यज्ञ कुटिया' में आ जाना, उपचार किया जायेगा।' एक के बाद एक भक्तजन अपनी पीड़ा का इलाज पाकर जाते रहे। सबसे अंत में पीड़ाहरि बाबा ने ताई को बुलाया। ताई हाथ जोड़, बाबा के सामने बैठ गई। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। बाबा ने कहा, 'चिंता मत कर माई। तेरी बेटी नंदिनी अवश्य अच्छी होगी। उसे इंद्र-सा राजकुमार मिलेगा। हम स्वयं साधना करेंगे। अनुष्ठान करेंगे। तू एक सप्ताह के लिये उसे आश्रम में छोड़ दे। प्रभू पर विश्वास रख बाकी साध्वी गौरी तुझे समझा देगी। तेरा कल्याण होगा। ताई को आशीर्वाद देकर पीड़ाहरि बाबा कुटिया में ही अंर्तध्यान हो गये।'

गौरी ने एकांत में ले जाकर ताई को समझाते हुये कहा, 'माई तेरी बेटी का सौभाग्य है कि प्रभू स्वयं अनुष्ठान कर रहे हैं। यह साधारण अनुष्ठान नहीं बल्कि महा अनुष्ठान है। इसके आयोजन में कम से कम लगभग बीस लाख रुपये लग जायेंगे। कई देवताओं को प्रसन्न करना होगा। तू कल तक रुपयों का इंतज़ाम कर ले।'

'पर, साध्वी जी, मेरे पास तो इतने रुपये नहीं हैं। इनके जाने के बाद, ग्रेचूटी के सारे पैसे नंदिनी के इलाज में लग गये। मेरे पास तो सब कुछ मिलाकर सत्तर हजार रुपये ही हैं।' ताई रो पड़ी।

'तो ठीक है, तू ऐसा कर, अपना घर आश्रम के नाम कर दे। मैं प्रभू से बात करूँगी। गरीबों की मदद के लिये प्रभू सदैव तैयार रहते हैं। साध्वी गौरी ने ताई को उपाय बताते हुये कहा।'

'लेकिन, मेरे चार बेटे, बहुये व उनके बच्चे भी मेरे साथ ही रहते हैं। सब के सब बेचारे बेघर हो जायेंगे ताई ने रोते हुये साड़ी का एक छोर अपने मुँह में खोंस लिया।'

'तू इसकी चिंता बिल्कुल न कर माई। तेरे बेटे कोई न कोई काम तो अवश्य ही करते होंगे। सब मिलकर आश्रम का कर्ज़ चुका देना। और फिर हम तुझे या तेरे परिवार को घर से थोड़े ही निकाल रहे हैं। जब तू हमारे पैसे दे देगी हम पुनः तेरा घर तेरे नाम कर देंगे। वैसे तो सब मोह-माया है। तेरा-मेरा कुछ नहीं हैं, सब प्रभू का है। बस तू कल घर के पेपर आश्रम के नाम कर दे और परसों सुबह तड़के पाँच बजे अपनी बेटी को अनुष्ठान के लिये आश्रम छोड़ जा। प्रभू तेरा भला करेंगे।' साघ्वी गौरी संवाद कुटिया के भीतर चली गई।

ताई भारी मन से घर की ओर चल दी। आज उसके चेहरे पर कल जैसी खुशी नहीं थी। घर पहुंचकर ताई ने संदूक से घर के पेपर निकाल कर अपने झोले में डाल लिये और बिस्तर पर लेट गई पर नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी। करवटें बदलते हुये वह सारी रात बेटी नंदिनी और अपने परिवार के बारे में सोचती रही। उसका मन किसी भी तरह से अपना घर आश्रम के नाम करने को राजी नही हो रहा था पर क्या करे, बेटी नंदिनी के दुःख के आगे वह बेबस थी। अगले दिन सुबह ही वह अपना घर आश्रम के नाम कर आई। एक के बाद एक दिन बीतते गये और आज इतवार है, आठवाँ दिन। आज वह नंदिनी को आश्रम से लेने जा रही है। घर से निकल कर उसने ऑटो को आवाज़ दी। ऑटो वाले ने उसके पास आकर पूछा, 'कहाँ जाना है माई ?' 'मुकामगंज पीड़ाहरि बाबा के आश्रम।' ताई ने बिना मोल-भाव किये ऑटो में बैठते हुये कहा।' 'बीस रुपये लगेंगे माई। ऑटो वाले ने बाद में झिकझिक से बचने के लिये पहले से ही अपना रेट बताते हुये कहा।' 'ठीक है दे दूँगी, पर तू ज़रा जल्दी चल।' ताई

को आज पैसे की परवाह नहीं थी । आज उसकी मुराद पूरी होने वाली थी । ऑटो वाले ने ऑटो स्टार्ट करके ऑटो चौथे गियर में डाल दिया । दस मिनट में ही वे आश्रम के गेट पर थे ।

पर यह क्या ! पूरे आश्रम को पुलिस ने क्यों घेरा हुआ है ! ऑटो से उतरकर ताई ने सामने खड़े रिक्शावाले से पूछा, 'भैया, आश्रम में पुलिस क्यों आई है ?'

रिक्शावाले ने इशारा करते हुये बताया - 'माई, यहाँ वो सामने अनुष्ठान भवन की सैकिंड फलोर से कूद कर एक लड़की ने जान दे दी है । वह देख उसकी लाश पुलिस शिनाख़्त कर रही है । लोग कह रहे हैं कि बाबा इससे जबरदस्ती करना चाहते थे बेचारी ने कूद कर अपने प्राण दे दिये । साला लंपट बाबा, रात से ही फरार है ।'

आश्रम के बाहर बैठे रहने वाले भिखारी रधिया ने कहा, 'मेरी बीवी लक्ष्मी को भी बाबा ने ही गायब किया है ।'

आश्रम के प्रांगण में हज़ारों की तादात में खड़े बाबा के समर्थक बाबा को निर्दोष साबित करने में लगे हुये थे । साध्वी मयूरी कह रही थी - 'बाबा बेकसूर हैं उन्हें साज़िश के तहत फँसाया जा रहा है ।'

साधू राम गोपाल एक टी.वी चैनल को अपना बयान देते हुये कह रहे थे, 'सदैव भक्तों का भला सोचने वाले प्रभू ऐसी घिनौनी हरकत कभी नहीं कर सकते । यह सब विरोधियों की चाल है । वे हमारे धर्म का कबाड़ा करना चाहते है।'

सेवक रामदीन ने कहा, 'देख लेना बाबा बेकसूर साबित होंगे । जो बाबा को सतायेगा खड़े-खड़े भस्म हो जायेगा । बोलो पीड़ाहरि बाबा की जय ।' बाबा के समर्थकों का हुज़ूम बाबा के समर्थन में जयघोष के नारे लगाता हुआ आश्रम के मेन गेट की ओर आ गया । वहाँ खड़े लोगों की बातों को अनसुना कर ताई पागलों की तरह भीड़ को चीरती हुई लाश के एकदम करीब पहुंच गई, 'अरे! यह तो नंदिनी है, मेरे बेटी, क्या हुआ मेरी बेटी को ?' रोते हुये ताई ने नंदिनी के सिर को अपनी गोद में रख लिया ।

'यह आपकी बेटी है ? सामने खड़े इंस्पैक्टर ने पूछा।'

'हाँ साहब, यह मेरी लाडली है। मेरी बच्ची नंदिनी।' इंस्पैक्टर साहब क्या हुआ मेरी बच्ची को ?'

'आपकी बेटी ने अनुष्ठान भवन की खिड़की से कूद कर जान दी है, लेकिन हमें मालूम है कि यह आत्महत्या नहीं कोल्ड ब्लडड मर्डर है । आप घबराइये नहीं, दोषी को अवश्य सजा होगी । बाबा पुलिस के हाथों बच नहीं सकता ।' लाश को पोस्टमार्टम के लिये गाड़ी में रखवाते हुये इंस्पैक्टर ने कहा ।

गाड़ी रवाना हो गई । ताई वहीं बाबा के चबूतरे पर सिर पटक-पटक कर बेहोश हो गई ।

मौन रहने से आत्मिक शक्ति प्राप्त होती है...मैत्री करुणा मुदितोपेक्षाणाः, अर्थात् ऊँचे रसूखदार लोगों से मित्रता करने से सुख की प्राप्ति होती है । आश्रम से सतसंग की आवाजें आने लगी....और सतसंग चलता रहा ।

आइये, संजो लें विरासत के ये निशां

अरुण तिवारी

नेपाल में आए भूकंप ने जीवन की न भरी जा सकने वाली क्षति तो की ही है, नेपाली विरासत के कई निशानों को भी खतरे में ला दिया है। काठमांडू घाटी इसमें प्रमुख है। काठमांडू में हुई तबाही में राजा के दरबार की ऐतिहासिक इमारत व मूर्ति पर भी खतरा बरपा है। गौरतलब है कि काठमांडू घाटी, महात्मा बुद्व का जन्मस्थान-लुम्बिनी, चितवन नेशनल पार्क और सागरमाथा नेशनल पार्क को मिलाकर नेपाल के कुल चार स्थान, विश्व विरासत की सूची में है। 15 अन्य स्थान प्रस्तावित सूची में हैं। राहत की खबर है कि फिलहाल, जो बचा है, संयुक्त राष्ट्र ने उसे संरक्षित करने की पहल शुरु कर दी है। इस तबाही का एक भारतीय सबक यह भी है कि वह विरासत के अपने निशानों की चिंता करनी शुरु करे; खासकर, विश्व विरासत के निशानों को। उनकी सुरक्षा के तकनीकी उपाय व सावधानियों पर अम्ल करना शुरु कर देना जरूरी है; कारण कि वैज्ञानिक आकलनों ने साफ कर दिया है कि प्राकृतिक आपदा के आगामी अंदेशों से अछूता तो भारत भी नहीं रहने वाला है।

गौर कीजिए कि यूनेस्को की टीम सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्व के जिन संपत्तियों को 'विश्व विरासत' का दर्जा देती है, वे विश्व विरासत का हिस्सा बन जाती हैं। उन्हे संजोने और उनके प्रति जागृति प्रयासों को अंजाम देने में यूनेस्को, संबंधित देशों के साथ साझा करता है। यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र संघ का शैक्षिक, वैज्ञानिक एवम् सांस्कृतिक संगठन। यूनेस्को के इस दायित्व की शुरुआत ऐतिहासिक महत्व के स्थानों व इमारतों की एक अंतर्राष्ट्रीय परिषद 'इकोमोस' द्वारा ट्युनिशिया में आयोजित एक सम्मेलन में आये एक विचार से हुई। 18 अप्रैल, 1982 में इसी सम्मेलन में पहली बार 'विश्व विरासत दिवस' का विचार पेश किया गया, तो मंतव्य भी बस, इतना ही था। यूनेस्को ने 1983 के अपने 22वें अधिवेशन में इसकी मंजूरी दी। आज तक वह 981 संपत्तियों को विश्व विरासत का दर्जा दे चुका है। संकटग्रस्त विरासतों की संख्या 44 है। सबसे अधिक 49 स्थान/संपत्तियों के साथ इटली, विश्व विरासत की सूची में सबसे आगे और 30 स्थान/संपत्तियों के साथ भारत सातवें स्थान पर है। अपनी विरासत संपत्तियों का सबसे बेहतर रखरखाव व देखभाल करने का सेहरा जर्मनी के सिर है।

गौरतलब है कि आज भारत के छह प्राकृतिक और 24 सांस्कृतिक महत्व के स्थान/इमारतें विश्व विरासत की सूची में दर्ज हैं। अजंता की गुफायें और आगरा फोर्ट ने इस सूची में सबसे पहले 1983 में अपनी जगह बनाई। सबसे ताजा शामिल स्थान राजस्थान के पहाड़ियों पर स्थित रणथम्भौर, अंबर, जैसलमेर और गगरोन किले हैं। ताजमहल, लालकिला, जंतर-मंतर, कुतुब मीनार, हुमायुं का मकबरा, फतेहपुर सीकरी, अंजता-एलोरा की गुफायें, भीमबेतका की चट्टानी छत, खजुराहो के मंदिर, महाबलीपुरम्, कोणार्क का सूर्यमंदिर, चोल मंदिर, कर्नाटक का हम्पी, गोवा के चर्च, सांची के स्तूप, गया का महाबोधि मंदिर, आदि प्रमुख सांस्कृतिक स्थलियाँ हैं।

प्राकृतिक स्थानों के तौर पर कांजीपुरम वन्य उद्यान, नंदा देवी की खूबसूरत पहाड़ियों के बीच स्थित फूलों की घाटी और केवलादेव पार्क भी इस सूची में शामिल हैं। पहाड़ी इलाकों में रेलवे को इंजीनियरिंग की नायाब मिसाल मानते हुए तमिलनाडु के नीलगीरि और हिमाचल के शिमला-कालका रेलवे को विश्व विरासत होने का गौरव प्राप्त है। कभी विक्टोरिया टर्मिनल के रूप में मशहूर रहा मुंबई का रेलवे स्टेशन आज छत्रपति शिवाजी टर्मिनल के रूप में विश्व विरासत का हिस्सा है।

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, लेह-लद्दाख और सारनाथ के संबंधित बौद्ध स्थल, प. बंगाल का बिशुनपुर, पाटन का रानी का वाव, हैदराबाद का गोलकुण्डा, मुंबई का चर्चगेट, सासाराम स्थित शाह सूरी का मकबरा, कांगड़ा रेलवे और रेशम उत्पादन वाले प्रमुख भारतीय क्षेत्रों समेत 33 भारतीय संपत्तियाँ अभी प्रतीक्षा सूची में हैं। यदि पाक अधिकृत कश्मीर के गिलगित बलास्तिान वाले हिस्से में उपस्थित बाल्तित के किले को भी इसमें शामिल कर लें तो प्रतीक्षा सूची की यह संख्या 34 हो जाती है।

उल्लेखनीय है कि यूनेस्को ने विरासत शहरों की एक अलग श्रेणी और संगठन बनाया है। कनाडा इसका मुख्यालय है। इस संगठन की सदस्यता प्राप्त 233 शहरों में फिलहाल भारत, पाकिस्तान और बांग्ला देश का कोई शहर शामिल नहीं है। आप यह जानकर संतुष्ट अवश्य हो सकते हैं कि एक विरासत शहर के रूप में जहां हड़प्पा सभ्यता के सबसे पुराने निशानों में एक - धौलवीरा और आजादी का सूरज उगने से पहले के प्रमुख निशान के रूप दिल्ली को भी 'विश्व विरासत शहर' का दर्जा देने के बारे में सोचा जा रहा है। किंतु दिल्ली-एनसीआर के इलाके को जिस तरह भूंकप की स्थिति में बेहद असुरक्षित माना जा रहा है, क्या इसे संजोना इतना आसान होगा ?

इन तमाम आंकड़ों से इतर विरासत का वैश्विक पक्ष चाहे जो हो, भारतीय पक्ष यह है कि विरासत सिर्फ कुछ परिसंपत्तियाँ नहीं होती। बाप-दादाओं के विचार, गुण, हुनर, भाषा, बोली और नैतिकता भी विरासत की श्रेणी में आते हैं। संस्कृति को हम सिर्फ कुछ इमारतों या स्थानों तक सीमित करने की भूल नहीं कर सकते। भारतीय सांस्कृतिक विरासत का मतलब 'अतिथि देवो भवः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम' से लेकर 'प्रकृति माता, गुरु पिता' तक है। गो, गंगा, गीता और गायत्री आज भी हिंदू संस्कृति के प्रमुख निशान माने जाते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब, बाइबिल और कुरान को विरासत के चिन्ह मानकर संजोकर रखने का मतलब किसी पुस्तक को संजोकर रखना नहीं है। इसका मतलब उनमें निहित विचारों को शुद्ध मन व रूप में अगली पीढी को सौंपना है। क्या हम ऐसा कर रहे हैं ? हमारी पारिवारिक जिंदगी और सामाजिक ताने-बाने में बढते तनाव इस बात के संकेत हैं कि हम भारतीय सांस्कृतिक विरासत के असली संस्कारों को संजोकर करने रखने में नाकामयाब साबित हो रहे हैं। हमारा लालच, स्वार्थ, हमारी संवेदनहीनता और रिश्तों के प्रति अनादर हमें भावी बर्बादी के प्रति आँख मूँदने की प्रक्रिया में ले जा चुके हैं। यह सांस्कृतिक विरासत से चूक ही है कि हम कुदरत का अनहद शोषण कर लेने पर उतारू हैं। नतीजा क्या होगा ? सोचिए!

प्रश्न कीजिए कि क्या हमारे हुनरमंद अपना हुनर अगली पीढी को सौंपने को संकल्पित दिखाई देते हैं ? ध्यान, अध्यात्म, वेद, आयुर्वेद और परंपरागत हुनर की बेशकीमती विरासत को आगे बढाने में यूनेस्को की रुचि हो न हो, क्या भारत सरकार की कोई रुचि है ? भारत की माँग पर विश्व योग दिवस की घोषणा को सामने रख हम कह सकते हैं कि हाँ, भारत सरकार की रुचि है। किंतु दिल पर हाथ

रखकर खुद से पूछिए कि क्या गंगा, गो और भारतीय होने के हमारे गर्व की रक्षा के लिए आज वाकई कोई सरकार, समाज या हम खुद संकल्पित हैं ? नैतिकता की विरासत का हश्र हम हर रोज अपने घरों, सड़कों और चमकते स्क्रीन पर देखते ही हैं। पंजाब की बस में हुई अनैतिकता पर क्या हमारा दिल रोया? अनैतिक हो जाने के लिए हम नई पीढी को दोष भले ही देते हों, किंतु क्या यह सच नहीं कि हम अपने बच्चों पर हमारी गंवई बोली तो दूर, क्षेत्रीय-राष्ट्रीय भाषा व संस्कार की चमक तक का असर डालने में नाकामयाब साबित हुए हैं। सोचिए! गर हम विरासत के मूल्यवान मूल्यों को ही नहीं संजो रहे तो फिर कुछ इमारतें और स्थानों को संजोकर क्या गौरव हासिल होगा ? अपनी विरासत पर सोचने के लिए यह एक गंभीर प्रश्न है।

सावधान होने की बात है कि जो राष्ट्र अपनी विरासत के निशानों को संभाल कर नहीं रख पाता, उसकी अस्मिता और पहचान एक दिन नष्ट हो जाती है। क्या भारत ऐसा चाहेगा ? यदि नहीं तो हमें याद रखना होगा कि गुरुकुलों, मेलों, लोककलाओं, लोककथाओं और संस्कारशालाओं के माध्यम से भारत सदियों तक अपनी सांस्कृतिक विरासत के इन निशानों को संजोये रख सका। माता-पिता और ग्राम गुरु के चरण स्पर्श और नानी-दादी की गोदियों और लोरियों में इसे संजोकर रखने की शक्ति थी। नासिक नगर निगम ने बोर्ड लगाकर चेतावनी दे दी है - 'गोदावरी का पानी उपयोग योग्य नहीं है।' अब गंगा-जमुनी संस्कृति की दुर्लभ विरासत भी कहीं हमसे छूट न जाये। भारतीय अस्मिता व विरासत के इन निशानों को संजोना ही होगा। आइये, संजोयें।

ग़ज़ल

रूप सागर

इश्क़ की इबतिदा न कर पाए
हम किसी से वफ़ा न कर पाए।

सबको सब मिल गया इबादत से
एक हम ही दुआ न कर पाए।

ज़िन्दगी ने बहुत दिया हमको
हक़ मगर हम अदा न कर पाए।

कुछ मिला था मिज़ाज ही ऐसा
हम किसी से गिला न कर पाए।

उम्र भर काट ली सज़ा हमने
जुर्म क्या था पता न कर पाए।

वक़्त-ए-आख़िर सवाल था ख़ुद से
क्या किया और क्या न कर पाए?

पयाम

डॉ. बी.एल. गौड़

बहुत दिनों के बाद किसी ने
भेजा आज पयाम
शायद उसकी बिन्दिया से ही
पूरब हुआ ललाम ।

कब सोचा था आज उमर के
इस दो राहे पर
मन फिर से यौवन पा लेगा
और पा लेगा पर
फिर उड़ कर उस नगर चलेगा
जहाँ से चला पयाम ।

इस माटी के रंग निराले
पल पल बदले रूप
कभी बने यह प्रेम पुजारी
कभी बने यह भूप
ले गंगाजल कभी अँजुरी
कभी हाथ में जाम ।

कबिरा तो समझाकर हारा
मत पूजो पत्थर
कितनी मन्नत पूरी करते
मन्दिर गिरजाघर
इसी लिये लिख डाला उसने
हर ताने पर "राम" ।

प्यार ईश का नाम दूसरा
प्यार नहीं व्यापार
जो भी इसमें डूबे तल तक
वे ही उतरे पार
अन्तस के जो बीच बसा है
उसको करो प्रणाम ।

स्नेह ठाकुर का रचना संसार

स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

अनमोल हास्य क्षण	(नाटक-संग्रह)
जीवन के रंग	(काव्य-संग्रह)
दर्दे-ज़ुबाँ	(नज़्म व ग़ज़ल संग्रह)
आज का पुरुष	(कहानी-संग्रह)
जीवन-निधि	(काव्य-संग्रह)
आत्म-गुंजन	(आध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
हास-परिहास	(हास्य कविताएँ)
ज़ज़्बातों का सिलसिला	(काव्य-संग्रह)
The Galaxy Within	(A collection of English poems)
अनुभूतियाँ	(काव्य-संग्रह)
काव्य-वृष्टि	(संकलन एवं संपादन)
पूरब-पश्चिम	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
बौछार	(संकलन एवं संपादन)
काव्य हीरक	(संकलन एवं संपादन)
संजीवनी	(स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख)
उपनिषद् दर्शन	(अध्यात्मिक)
काव्य-धारा	(संकलन एवं संपादन)
काव्यांजलि	(काव्य-संग्रह)
अनोखा साथी	(कहानी-संग्रह)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
आज का समाज	(लेख-संग्रह)

चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)

कैकेयी : चेतना-शिखा (उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र.
अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)

कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ)

लोक-नायक राम (उपन्यास)

कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ)

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा.) लि.
४/५ बी., आसफ अली रोड
नई दिल्ली - ११०००२
भारत

Star Publishers' Distributors
55, Warren Street
LONDON – W1T 5NW
England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय
पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित